|| धर्मश्री ||

परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

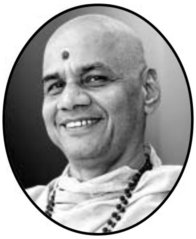

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट : www.dharmashree.org

वर्ष १५ अंक ४ फाल्गुन, युगाब्द ५११८ संयुक्त अंक-अक्तुबर २०१६-मार्च २०१७

संपादक मंडल :
संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
पं. अशोक पारीक,
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
श्री. राहुल मारुलकर, पुणे
मुद्रक :
मंदार प्रिंटर्स,
७५६, कसबा पेठ, पुणे ११.
दूरभाष :(०२०) २४४५६१४२,
२४५७८९४२
mandarprinters@gmail.com

सूचना

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

– संपादक

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. जपयज्ञ
९. योग के सभी आयामों की प्रकाशक है गीता
१३. एक स्वप्न जो साकार हुआ!
१७. त्रिदशकपूर्ति पर आयोजित राष्ट्रीय योग संस्कार महोत्सव
२३. योगेश्वर : गीता सार और योग का निरूपण (महानाट्‌य)
२५. गुरुदेव का ६७ वाँ जन्मोत्सव!
२७. राष्ट्रीय योग संस्कार महोत्सव : कतिपय स्मृतियाँ
२९. योग संस्कार महोत्सव सदैव स्मरणीय रहेगा!
३२. श्री दधिमथी वैदिक गुरुकुल, गोठमांगलोद का भूमि-पूजन सम्पन्न
३४. मानव जन्म ही मोक्षप्राप्ति का साधन हैं।
३६. श्रीकृष्ण वेदविद्यालय, पानीपत का शिलान्यास
३८. गुरुदेव के आगामी कार्यक्रम

★ आवश्यक सूचना ★

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेदविद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498, फैक्स : 0145-2662811
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

धर्मश्री के इस अंक की यजमान
सौ. वेदिका विवेक कुलकर्णी (पुणे) हैं।

साभिनंदन धन्यवाद !

संपादकीय

प.पू. स्वामी गुरुदेवजी द्वारा तीस वर्ष पूर्व स्थापित 'गीता परिवार' अनेक दृष्टि से अ–द्वितीय है–अभिनवता से, गुणों से, संख्या से, विस्तार से तथा उसकी अनोखी कार्यप्रणालि से भी। पू. गुरुदेवजी ने जिस सुनिर्धारित दार्शनिक तत्त्वोंपर परिवार की नींव रखी तथा उसके समग्र कार्य की नीति पंचसूत्री से सुस्पष्ट की उसके कारण प्रारंभ से ही यह निश्चित हुआ कि किस दिशा में 'परिवार' जन अपनी मार्गक्रमणा करेंगे। और हुआ भी वैसा ही।

क्रमश: महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में तथा तत्पपश्चात् देश के अनेकानेक प्रांतों में गीता परिवार का कार्य सुस्थिर हो गया। ऐसे कार्य की उपयोगिता नित्य होने से वह निरंतर चलता रहे इस हेतु नये–नये कार्यकर्ताओंकी भी आवश्यकता रहती है। यह ध्यान में रखते हुए परिवारने न केवल बालकों को संस्कारित किया अपितु उन्हीं में से अनेकों का 'बाल–संस्कार–कार्यकर्ता' के रूप में निर्माण किया। तदर्थ अनेक विशेष 'कार्यकर्ता शिविर' आयोजित किये।

किसी भी नये उपक्रम की सफलता तभी निश्चित होती है जब उसके प्रेरक की अनुपस्थिति में भी वह सुचारु रूप से चलने लगे। इसी को दृष्टिगत रखते हुए पू. गुरुदेवजी ने प्रारंभिक कुछ वर्षों के पश्चात् 'गीता परिवार' को संस्थात्मक रूप देकर पूरा कार्यभार डॉ. श्री. संजयजी मालपाणी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं के सक्षम कंधोंपर सौंप दिया। अतीव संतोष की बात है कि इन सभी ने कार्य का ध्वज निरंतर अग्रसर रखकर पू. गुरुदेव के विश्वास को सार्थक किया।

इस पृष्ठभूमिपर कुछ समय पूर्व संपन्न गीता परिवार का त्रिदशकपूर्ति महोत्सव अपूर्व रहा। पूरे भारतवर्ष से बडी संख्यामें उपस्थित बालक–बालिकाएँ एवं कार्यकर्ता गण, उत्सव अद्वितीय हो इस हेतु सुदीर्घ काल चलती सुनियोजित तैय्यारियाँ और इन सभी को चार चाँद लगानेवाली प.पू. योगऋषि स्वामी रामदेवजी महाराज की कृपामयी उपस्थिति इन सभी के कारण यह महोत्सव नि:संदेह चिरस्मरणीय रहा।

कई बार ऐसे आयोजनों पर आलोचक प्रश्नचिह्न लगाते हुए 'उसकी फलनिष्पत्ति क्या है?' ऐसा प्रश्न उपस्थित करते हैं। गीता परिवार की दृष्टि से देखा जाय तो ऐसे समारोह भी बालकोंपर तथा कार्यकर्ताओंपर संस्कार भी करते हैं, आगे बहुत कुछ और करनेकी प्रेरणा भी देते हैं। जो पाठकगण इस महोत्सव में उपस्थित न रह सके उन्हें इस अंक में उसकी झलक दिखलाने का प्रयास किया है।

श्रद्धाञ्जलि!

पूरे देश के धार्मिक एवं सांस्कृतिक विश्व की अपरिमित हानी हुई जब प्रात:स्मरणीय श्रद्धेय जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य श्रीजी महाराजने गोलोकधाम की ओर प्रस्थान किया।

कुलपरंपरा, गुरुपरंपरा, आचार, चरित्र, विद्वत्ता एवं संयोजनकुशलता आदि अनेक पहलुओंसे मण्डित यह विभूतिमत्व सभी धर्माचार्य, पीठाधीश्वर, संप्रदाय प्रमुख इनके साथ सभी पक्षोंके राजनीतिज्ञ महानुभावों के भी आदरस्थान रहे। हमारे प.पू. गुरुदेव पर तो उनकी विशेष अकृत्रिम स्नेहमयी कृपा रही।आपके प्रति हम धर्मश्री परिवार के सभी सदस्य कृतज्ञतापूर्ण एवं भावभरी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं।

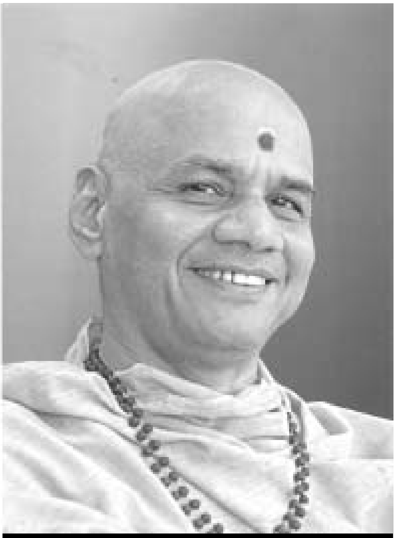

जपयज्ञ
एक अन्तर्यात्रा !

बैठ जाते हैं माला फेरने के लिये तथा माला भी फेरते रहते हैं और घर का प्रबंधन भी देखते रहते हैं। माला भी चालू है और 'दूधवाला आया कि नहीं यह भी पूछ लेते हैं।' माला भी चालू है और 'मेहमानों को चाय दी कि नहीं' यह भी पूछ लेते हैं।

किसी प्रकार भी लिया जाने वाला भगवन्नाम उपयोगी ही है, वह पाप का नाशक है, पुण्य प्रदायक है। ये समस्त बातें बिल्कुल सत्य हैं। सत्य होने पर भी मुझे अनेक बार ऐसा लगता है कि हमने इस साधन का 'ओवर सिम्पलीफिकेशन', अति साधारणीकरण कर दिया। और यहीं हम भटक जाते हैं।

जपयज्ञ
कतिपय महत्त्वपूर्ण बिन्दु जो सभी को जानने आवश्यक हैं!

श्रीभगवद्गीता में भगवान् ने जप को सर्वश्रेष्ठ यज्ञ कहा है 'यज्ञानाम् जपयज्ञोऽस्मि'। इस अर्धाली में ही भगवान् ने जप को एक श्रेष्ठ स्तर पर ले जाकर रख दिया। क्यों? किस लिये भगवान् ने समस्त यज्ञों में जप की महत्ता को अधिक बताया? भगवान् शंकराचार्य महाराज इसका कारण कहते हैं 'सर्वसुलभत्वात्'। क्योंकि यह सभी के लिये सुलभ है। कोई भी इसे कर सकता है और वह हमारे चित्त को बहुत शीघ्रता से पवित्र करता जाता है।

भगवान् ने केवल जप शब्द का ही प्रयोग नहीं किया; अपितु उन्होंने **'जप-यज्ञ'** का प्रयोग किया है। जप तो वैसे हम लोग भी करते हैं- बैठ जाते हैं माला फेरने के लिये तथा माला भी फेरते रहते हैं और घर के प्रबंधन की योजनायें भी बनाते रहते हैं। माला भी चालू है और 'दूधवाला आया कि नहीं यह भी पूछ लेते हैं।' माला भी चालू है और 'मेहमानों को चाय दी कि नहीं' यह भी पूछ लेते हैं।

घूमते-फिरते, आप जैसे भी नाम लेते हैं, लेते रहियेगा। बस, आपका कल्याण हो जायेगा। भगवन्नाम अत्यन्त श्रेष्ठ है और भगवान् हर जीव का कल्याण करते ही रहते हैं। किसी प्रकार भी लिया जाने वाला भगवन्नाम उपयोगी ही है, वह पापनाशक है, पुण्यप्रदायक है। ये समस्त बातें बिल्कुल सत्य हैं। सत्य होने पर भी मुझे अनेक बार ऐसा लगता है कि हमने इस साधन का अतिसाधारणीकरण कर दिया। और यहीं से हम भटक जाते हैं।

जपयज्ञ में नियमितता अपेक्षित :-

जब भी संभव हो; भगवान् का नाम लेते रहियेगा, बात ठीक है। हम रसोई बनाते हुए भगवान् का नाम लेते हैं और कब भूल गये यह भी ध्यान में नहीं आता और रसोई का काम चलता रहता है। इस प्रकार नामस्मरण जो किया जाता है, वह जप तो है लेकिन 'जपयज्ञ' नहीं है। इसको जपयज्ञ नहीं कहा जा सकता है। मैंने कहा कि यज्ञ जहाँ-जहाँ होगा वहाँ पर भावना आवश्यक है; लेकिन इसके साथ-साथ अनुशासन भी दूसरी आवश्यक बात है। यज्ञ में अनुशासन होता है। इसलिये जब यज्ञ करने के लिये बैठते हैं तो कितनी आहुतियाँ देना, किस द्रव्य से देना, किस मंत्र से देना, ये बातें सुनिश्चित होती हैं और इसमें जरा भी परिवर्तन कोई नहीं कर सकता। तो उसी प्रकार जब हम जप को "**जप-यज्ञ**" की श्रेणी में रखना चाहते हैं; तो हमें हमारे जपानुष्ठान में कुछ नियमितता

लानी पड़ेगी। कुछ अनुशासन लाना पड़ेगा। अनुशासन के साथ ही हम लोग जप करना आरम्भ करेंगे तो हमारे द्वारा किया जाने वाला 'जप-यज्ञ' अवश्यमेव हमारे जीवन में समस्त यज्ञों से श्रेष्ठ सिद्ध हो सकेगा।

जप एक विलक्षण साधन है:–

हमारे संतों ने, आचार्यों ने और स्वयं श्रीभगवान् ने भी जप की जो महत्ता बताई है; उसको ध्यान में लेकर के इस जप का बड़ा गहरा विचार करना आवश्यक है। बाकी जितने भी साधन हैं, जितने भी यज्ञ हैं, वे बहुत बड़ी मात्रा में बहिरंग साधन हैं। ये बाहर के द्रव्यों के द्वारा किये जाते हैं, बाहर के उपकरणों के द्वारा किये जाते हैं। इनमें विशेष स्थितियों की आवश्यकता है; किन्तु जप एक ऐसा साधन है जिसके लिये अन्य किसी उपादान की आवश्यकता नहीं। इसमें माला का उपयोग तो है लेकिन माला की अनिवार्यता नहीं। ऐसा यह सर्व सुलभ जप-यज्ञ भगवान् ने अपनी विभूति के रूप में प्रतिपादित किया। इसका जरा गम्भीरता से विचार करना बहुत उपयोगी होगा।

क्या है जप?:–

भगवान् पतञ्जलि ने भी अपने साधनों में इस जप का स्वयं वर्णन किया है। परमात्मा का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने कहा–

तस्य वाचकः प्रणवः।
तज्जपस्तदर्थभावनम्।

'ॐ' भगवान का परिचायक नाम है, उसका जप किया जाय। यह जप कैसे किया जाये? तो कहते हैं कि अर्थभावना के साथ किया जाये। भगवन्नाम का जप या किसी मंत्र का जप भी यहाँ पर गृहीत है। आप मंत्रों के जप की बात अथवा भगवान् के नाम जप की बात कोई भी बात ले सकते हैं, उसमें भी भगवान् के नाम की महत्ता अधिक मानी गई है। प्रभु का यह नाम नियमित रूप से जब मैं आसन पर बैठकर लेना आरम्भ करता हूँ तब क्या-क्या प्रक्रियायें घटती हैं और उन क्रियाओं का क्या उपयोग है, यह बात हमारे शास्त्रकारों ने बड़ी सुन्दर रीति से हम लोगों के सामने रखी हैं। **हम लोगों की मूल समस्या चित्त की अशुद्धि है। चित्त की एकाग्रता जरूरी है।** यदि वास्तव में इस चित्त को शुद्ध करके; एकाग्र करके परमात्मतत्त्व पर्यन्त पहुँचना हो, तो जप ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात कैसे हो जाता है, हम इसी पर यहाँ विचार कर रहे हैं।

प्रभु का यह नाम नियमित रूप से जब मैं आसन पर बैठकर लेना आरम्भ करता हूँ तब क्या-क्या प्रक्रियायें घटती हैं और उन क्रियाओं का क्या उपयोग है, यह बात हमारे शास्त्रकारों ने बड़ी सुन्दर रीति से हम लोगों के सामने रखी हैं। हम लोगों की मूल समस्या चित्त की अशुद्धि है, चित्त की एकाग्रता है। यदि वास्तव में इस चित्त को शुद्ध करके; एकाग्र करके परमात्मतत्त्व पर्यन्त पहुँचना हो तो जप ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात कैसे हो जाता है, हम इसी पर यहाँ विचार कर रहे हैं।

क्या है मन का स्वरूप?:–

जिस मन को हम लोग शुद्ध और एकाग्र करना चाहते हैं, उस मन का स्वरूप क्या है? मन कैसा है? हम लोगों को अपनी भाषा के कारण एक ऐसा भ्रम हो जाता है कि 'मन' नाम की कोई थैली है; जिसमें विचार आता है या उससे बाहर विचार जाता है। वस्तुतः मन का स्वरूप ऐसा है नहीं। मन का स्वरूप कैसा है? विचार मन में आया और विचार मन से गया, यह कहते हुए विचार और मन इन दोनों बातों को अलग-अलग कर देते हैं। वस्तुतः हमारा मन विचारात्मक हैं। **विचार ही मन का स्वरूप है।** विचारों की लहरें, विचारों की तरंगें, यही मन का स्वरूप है। ये जाग्रत होने वाली वृत्तियाँ, इन वृत्तियों का सतत् प्रवाह ही मन का स्वरूप है। यह बात हम समझें।

एक सास ने नई-नवेली बहू से कहा कि मैं बाजार से गोभी भेजती हूँ, आज उसकी सब्जी बना लेना। सास ने गोभी भेज दी और किसी अन्य कार्य से चली गई। घर पर आदमी

शरीर से काम संसार का और मन में सदैव भगवान का स्मरण रखो। – पूज्यपाद

गोभी लेकर आया। लौटकर सास को लगा कि आज बहू ने अच्छी सब्जी बनाई होगी। बहू ने कभी अपने पीहर में काम किया नहीं था, केवल लोगों को काम करते हुए देखा था। सब्जी उसको बनानी थी।

घर वापस आने पर जब सास ने पूछा, सब्जी बनी ? तो बहूने कहा कैसे बनती ? आपने गोभी देखकर नहीं भेजी। सास ने कहा मैंने तो अच्छी गोभी भेजी थी। क्या हो गया। उसने कहा मैं गोभी चीरने के लिये बैठी, देखा तो एक पत्ता निकला, दूसरा पत्ता निकला, तीसरा पत्ता निकला और पत्ते ही पत्ते निकलते गये। गोभी तो अन्दर थी ही नहीं। कैसी गोभी आपने भेजी ? सास ने अपना माथा ठोका कि पढ़ी-लिखी बहू घर में आई, लेकिन उसे पता नहीं कि पत्तों को निकालकर के गोभी को नहीं खोजा जाता। ये गोभी के पत्ते ही वास्तव में गोभी कहलाते हैं। इसका ज्ञान बहू को नहीं, उसी प्रकार विचारों को, वृत्तियों को दूर करके मन को नहीं खोजा जा सकता। ये वृत्तियाँ ही मन का स्वरूप है। **'संकल्प विकल्पात्मकं मनः'।** उठने वाले ये संकल्प और विकल्प यही हमारे मन का स्वरूप है। इन उठने वाली वृत्तियों का आधार शब्द होते हैं।

जप के समय मन में उठने वाले विभिन्न विचारों को कैसे रोकें :-

भगवान् पतञ्जलि कहते हैं कि इन अनेक शब्दों के कोलाहल को दूर करने के लिये एक शब्द का प्रयोग किया जाये। **'तत्प्रतिषेधार्थं एकतत्त्वाभ्यासः'।** अनेक शब्दों को यदि आप दूर करना चाहते हैं तो एक शब्द का आधार लीजिये। उस एक शब्द के आधार से बाकी सारे शब्द आपके अन्तःकरण से शान्त होते-होते, दूर होते-होते समाप्त हो सकेंगे। अतः जिस एक शब्द का आधार लेना है वह शब्द कौनसा है ? अरे! भगवान् का मंगलमय नाम। आप को जो भी प्रिय लगता है अथवा बड़ा बढ़िया होगा यदि आपको वह नाम अपने सद्गुरु से प्राप्त हुआ है।

यदि गुरुप्रदत्त नाम का या अपने प्रिय इष्ट के नाम का हम अपने आसन पर बैठ कर शान्ति से जप करना आरम्भ कर दें। आप सबका अनुभव है कि जप करते समय अनेक विचार मन में आते हैं। कभी-कभी तो ऐसा अनुभव होता है कि अन्य समय में जितने विचार नहीं आते हैं उससे अधिक विचार हमारे मन में तब आते हैं जब हम आसन पर जप करने के लिये बैठते हैं। वास्तविकता यह है नहीं। विचार तो निरन्तर आते हैं; किन्तु हमारे मन में इतने सारे विचार आ रहे हैं, इस ओर हमारा ध्यान तब जाता है जब हम जप करना आरम्भ करते हैं। इससे लगता है कि बहुत सारे विचार उसी समय क्यों आते हैं ? विचार तो आते ही रहते हैं, लेकिन जैसे ही मैंने जप करने का प्रयास किया, इन विचारों के अतिरिक्त विशेष कुछ करने का प्रयास किया, तो उन विचारों की ओर मेरा ध्यान विशेष रूप से जाता है। मन में आने वाले ये विचार आते ही रहेंगे। आने दीजियेगा, आरम्भ में। लेकिन जब यदि हम आसन पर बैठ करके नियमित रूप से रोज निश्चित संख्या में जप आरम्भ करेंगे तो भले ही दूसरे विचारों को आप रोक नहीं पायें, कोई बात नहीं, लेकिन एक बात तो निश्चित रूप से आपको ध्यान में आयेगी कि दूसरे आने वाले विचार भिन्न-भिन्न थे और मेरे जप का मन्त्र एक ही था। इसलिये समझ लीजिये कि मैं आधा घण्टा बैठा तो उस आधे घण्टे में आने वाले अन्य विचार तो भिन्न-भिन्न थे लेकिन भगवन्नाम एक ही था। आधे घण्टे में मंत्र अथवा भगवन्नाम का एक हजार जप आपने किया याने दस मालाएँ फेरीं। दस मालाओं में कुल मिलाकर सौ बार आपका ध्यान उस मंत्र के जप की ओर रहा और बाकी ध्यान बिखरता रहा, जिह्वा से जप चलता रहा। तब भी एक तो बड़ी बात हो गई कि कम से कम एक सौ बार एक ही विचार आपके मन में आया। आने वाले अन्य विचार भिन्न-भिन्न थे लेकिन यह भगवन्नाम का विचार सिर्फ एक ही था ।

यदि हम इस प्रक्रिया को थोड़ी सावधानी के साथ ऐसे ही करते रहते हैं, तो आज सौ बार मेरा ध्यान भगवन्नाम की ओर गया है, हो सकता है। कल या अगले सप्ताह अथवा

अगले महीने में एक सौ पचास बार तक जाये या दो सौ बार तक जाये। यह संख्या निश्चित रूप से बढ़ती जा सकती है। लेकिन उसके लिये आवश्यकता इस बात की है कि हम नियमित रूप से आसन पर बैठकर के ही जप करें।

जप के प्रकार :–

गुरु प्रदत्त मंत्र अथवा भगवन्नाम का जप चार तरीकों से लिया जाता है। और ये चारों (वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति और परा) उत्तरोत्तर गति से विकसित होने चाहिए। वैखरी में शब्दों का उच्चारण होता है; जिसे दूसरे लोग भी सुन सकते हैं; जबकि 'मध्यमा' में होठों से उच्चारण होता है, जिसे पास बैठा व्यक्ति भी सुन-समझ नहीं पाता। मध्यमा से आगे 'पश्यन्ति' है; जिसमें आप मन ही मन उच्चारण करते रहते हैं, और स्वयं ही उसे सुन पाते हैं, देख पाते हैं। जब ओठ न हिलें और मानसिक जप चलता रहे हर श्वास के साथ; तब वो 'परा' जप की उच्चतम श्रेणी होती है।

अतः जब हम जप की अन्तर्यात्रा आरम्भ करें तो सबसे पहले वह **वैखरी** पर नित्य रहे, इसकी सावधानी हमें रखनी चाहिये। वैखरी को उस नाम का अभ्यास हो जाये। अब जब वैखरी से उसका अभ्यास होगा तो चित्त पूरा एकाग्र तो नहीं होगा; किन्तु अधिक से अधिक समय उसमें व्यतीत होगा। अब धीरे-धीरे वह नाम वैखरी से बन्द कर के **मध्यमा** से लेना आरम्भ करें। हम थोड़ा-सा उसे मानसिक जप का स्वरूप दे दें और यह रोज करें। रोज वैखरी से लें, रोज मध्यमा से लें। एक अवस्था होती है जब जिह्वा से मैं नाम ले रहा हूँ। दूसरी अवस्था होती है जब मैंने होठ बन्द कर दिये हैं; लेकिन जीभ हिल रही है। तीसरी अवस्था यह होती है जब होठ भी बन्द हैं, जिह्वा भी बन्द है और केवल मन ही नाम ले रहा है। **इन्हें क्रमशः वाचिक, उपांशु और मानसिक जप कहते हैं।** हम इस प्रकार उस नाम का सहारा लेकर के एक अंतर्यात्रा की शुरूआत कर सकते हैं।

नामरस – माधुरी :–

एक दूसरी बात इसके साथ हम ध्यान में लें कि हमारी जिह्वा कर्मेन्द्रिय भी है और ज्ञानेन्द्रिय भी है। जिह्वा का एक दूसरा नाम है रसना। इसलिये जब एक नाम लें तो उस नाम का जो नामी है उसका प्रेम से स्मरण करें '**तत् जपः तत् अर्थ भावनम्**', मैंने श्रीराम का नाम लिया तो उसका अर्थ है श्रीराम इस अर्थ की भावना, श्रीराम की भावना और उस श्रीराम की भावना के साथ रस का प्रादुर्भाव – प्रेम का प्रादुर्भाव। जब भी नाम लिया शान्ति के साथ लिया और उस हर नाम के साथ भगवान् श्रीराम के लिये प्रेम की वृत्ति का जागरण भी होता रहा। मैं नाम अथवा नामी का – श्रीराम का चिन्तन भी करता रहा उनके एकाध गुण का चिन्तन उसके साथ होता रहा और बड़ा प्रेम मेरे भीतर जागृत होता रहा तो आगे चलकर के अनुभव यह

शेष पृष्ठ ३० पर.......

> आधे घण्टे में मंत्र का एक हजार जप आपने किया याने दस मालाएँ फेरीं। दस मालाओं में कुल मिलाकर सौ बार आपका ध्यान उस मंत्र के जप की ओर रहा और बाकी ध्यान बिखरता रहा, जिह्वा से जप चलता रहा। तब भी एक तो बड़ी बात हो गई कि कम से कम एक सौ बार एक ही विचार आपके मन में आया। आने वाले अन्य विचार भिन्न-भिन्न थे, लेकिन यह एक विचार सिर्फ था भगवन्नाम का विचार।
>
> यदि हम इस प्रक्रिया को थोड़ी सावधानी के साथ ऐसे करते रहते हैं, तो आज सौ बार मेरा ध्यान भगवत् नाम की ओर गया है, हो सकता है वह कल या अगले सप्ताह अथवा अगले महीने में एक सौ पचास बार जाये, दो सौ बार जाये। यह संख्या निश्चित रूप से बढ़ती जा सकती है। लेकिन उसके लिये आवश्यकता इस बात की है कि हम नियमित रूप से एक निर्धारित समय पर आसन पर बैठ कर के ही यह जप करें।

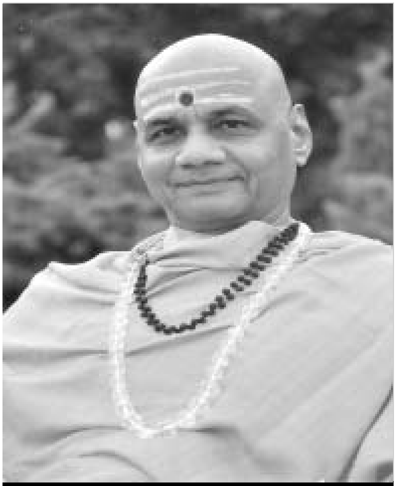

पूर्णयोग बोधिनी गीता (३)

योग के सभी आयामों की प्रकाशक हैं गीता

मनन योग्य बिन्दु

प्रस्तुत लेखमाला में परम पूज्य गुरुदेव ने बताया है किः–

- **केवल आसन–प्राणायाम की क्रियाएं ही योग नहीं है। ये साधक को उस मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार करतीं हैं; जब कि सम्पूर्ण जीवन को योगमय बनाने वाला ग्रंथ तो केवल भगवद्गीता ही है।**
- **जब हम भगवद्गीता के श्लोकों को एक अलग क्रम से समझने का प्रयास करते हैं, तो ध्यान में आता है कि यह महान ग्रंथ हमें पूरे जीवन की सिद्धि का, जीवन की सफलता का, परमात्मा से मिलन का पूरा ''रोड–मेप'' प्रदान करता है।**
- **श्रीमद्भगवद्गीता में ही समग्र योग का विश्लेषणात्मक विवेचन है।**
- **योग की विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा ''जीवात्मा'' पूर्णत्व की स्थिति** (Absolute Stage) **प्राप्त करने की क्षमता रखती है। यही मनुष्य का लक्ष्य भी है।**
- **कर्म तथा कर्मफल के सिद्धान्त को जब तक समझा नहीं जाता, तब तक योग–यात्रा का विधिवत् प्रारंभ ही नहीं होता।**
- **देह एवं देही का भेद अनुभव में आये बिना ज्ञान और वैराग्य का दीप प्रज्ज्वलित नहीं होता; जिसके अभाव में अज्ञान के अंधकार में ही ठोकरें खानी पड़ती है।**
- **जन्म का रहस्य तथा मृत्यु की अनिवार्यता, कर्म करने की स्वतंत्रता के साथ ही उनके चार्ज, रीचार्ज एवं डिस्चार्ज की प्रक्रियाओं को समझ कर तदनुसार जीवन जीना।**
- **कर्तापन का भाव एवं कर्तृत्व का अभिमान; बंधन के और अनासक्त भाव से किए गये कर्म मोक्ष के हेतु होते हैं।**

(गतांक से आगे)

एक होता है राजा, राजा कैसे होते हैं आप जानते हैं। लेकिन कुछ राजा ऐसे होते हैं जिनकी जीवन शैली ऋषियों के जैसी होती है। वे हो गये राजर्षि! छत्रपति शिवाजी महाराज का वर्णन समर्थ रामदासस्वामी ने किया। और कोई ऐरा–गैरा वर्णन करता तो मैं उसको मानता ही नहीं। लेकिन जिन्होंने अपना पूरा का पूरा जीवन भगवान के लिए अर्पण किया और वैसा करके दिखाया है, ऐसे

शुकासारिखे पूर्ण वैराग्य ज्याचे।
वसिष्ठापरी ज्ञान योगेश्वराचे।
कवि वाल्मिकीसारखा मान्य ऐसा।
नमस्कार माझा सद्गुरु रामदासा।।

ये उनका परंपरा में वर्णन है। जिनका ज्ञान वसिष्ठ के समान है, जिनका वैराग्य शुकदेव के समान है, जिनकी काव्य प्रतिभा महर्षि वाल्मीकि के समान है, ऐसे रामदास स्वामी जब छत्रपति शिवाजी महाराज का वर्णन

करते हैं, तो क्या कहते हैं?

''निश्चयाचा महामेरु। बहुत जनांसी आधारु। अखंड स्थितीचा निर्धारु। श्रीमंत योगी। यह ऐरे-गैरे व्यक्ति के द्वारा दिया गया सम्मान पत्र नहीं है। यह आजकल के पद्मभूषण-पद्मविभूषण, पद्मश्री वाला मामला भी नहीं है, यह दूसरा ही मामला है। सरकार तो अपने मानकों के आधार से यह सब देती है। वीतराग महापुरुष अपने लिये क्या बोलते हैं, उनकी अपने लिये क्या धारणा है? जो निस्पृह है, जो राजगुरु होने पर भी, छत्रपति शिवाजी महाराज के दीक्षागुरु होने पर भी, उनके राज्याभिषेक में उपस्थित नहीं थे। जो इतने निस्पृह हैं, ऐसे व्यक्ति के द्वारा किया गया उनका ये वर्णन है। तो यह जो ''श्रीमंत योगी'' शब्द है न! यह राजर्षि का अर्थ है। (अब शिवाजी महाराज के ऊपर ही बोलने लग जायें, उनके जीवन की पावित्रता के बारे में, उनकी विलक्षणता के बारे में, वह एक अलग ही बात है।)

राजा परीक्षित भी कम नहीं थे। वे स्वयं इसी प्रकार के राजर्षि थे। लेकिन केवल राजर्षि नहीं। वह राजर्षियों में भी सर्वश्रेष्ठ। ऐसा शुकदेवजी महाराज ने कहा है। **'राजर्षिसत्तम'**, राजर्षियों में भी सर्वश्रेष्ठ! मुझे बतलाना ये था कि इसीलिये राजा परीक्षित के लिये सात दिन पर्याप्त थे। हमारी गति कुछ और है। हम किस मुकाम पर हैं ये अपना-अपना स्वयं को देखना चाहिये। ये बात मैं आपके विवेक के ऊपर छोड़ देता हूँ। लेकिन राजा परीक्षित ने सात दिन कथा श्रवण करने के पश्चात् इसका दूसरा अर्थ किया। भगवान शुकदेवजी महाराज से उस ज्ञान को ग्रहण करने के पश्चात् क्या कहा? **''मृत्युभ्योः न बिभेम्यहं''।** 'महाराज आपने मुझे केवल ज्ञान ही नहीं दिया, आपने मुझे ज्ञान के साथ-साथ विज्ञान- यद् विज्ञान वि मितम्। आपने उसकी अनुभूति मुझे करा दी। और इसलिये राजा उस स्थिति तक पहुँच गया। कौनसी स्थिति? मैं वर्णन कर रहा हूँ वह ये -

''वासांसि जीर्णानि यथा विहाय। नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यानि संयाति नवानि देही''। आपको किसीने यदि नया वस्त्र लाकर दिया और कहा आज आपका जन्मदिन है, यह किमती सूट आपके लिये लाया हूँ, तो क्या आपको दु:ख होगा? नहीं होगा न? आपको तो बढ़िया लगेगा। जिस प्रकार नया वस्त्र मुझे मिला तो उसका आनंद होना चाहिये, दु:ख नहीं। उसी प्रकार राजा कहते हैं कि मुझे तो कोई डर ही नहीं है। मैं उस अनुभूति तक पहुँच गया हूँ। अब शरीर रहा तो क्या, न रहा तो क्या?

देहाभिमान बनाम अनासक्त भाव -

मैं श्रीमद्भागवत से ही एक उदाहरण आपको दूंगा। इसी सिद्धान्त को समझाने के लिये श्रीमद्भागवत में कथाएँ हैं। श्रीमद्भागवत में आपने एक महान चरित्र सुना होगा भगवान ऋषभदेवजी का। भगवान ऋषभदेवजी का चरित्र जो श्रीमद्भागवत में आया उसका पूरा वर्णन मैं नहीं कर रहा हूँ; अपितु थोड़े में इतना-सा समझ जाइये कि वे जब अपना सारा उत्तरदायित्व भली प्रकार निभाने के पश्चात, चक्रवर्ती सम्राट का सारा कर्त्तव्य पूर्ण करने के पश्चात, अवधूत होकर के निकल गए।

कल किसीने प्रश्न पूछा था कि गृहस्थाश्रम अच्छा है कि त्याग अच्छा है। उत्तर मैंने क्या दिया था? ''साठ वर्ष की आयु तक गृहस्थाश्रम अच्छा है। उसके बाद त्याग अच्छा है।'' और यह भगवान ऋषभदेव जी के जीवन में देखने को मिलता है। न केवल संसार किया; बल्कि चक्रवर्ती सम्राट का सारा दायित्व निभाया और सब करके कहीं जरा भी लिप्त नहीं हुए। जैसे देखा कि अपने उत्तराधिकारी भरत तैय्यार हैं, ब्रह्मावर्त में एक व्याख्यान दिया और ऐसे ही निकल गए। निवृत्ति का कोई बड़ा कार्यक्रम भी नहीं किया। हम लोग निवृत्ति का भी एक कार्यक्रम करते हैं। हमारे कुछ लोगों में ऐसी पद्धति है कि वे उपवास तो करते हैं - उपवास भी बढ़िया करते हैं। - एकादशी का दिन हैं फिर साबूदाना इतना चाहिये और फल इतने चाहिये और आमरस भी बन गया तो वह भी चाहिये। और

ये सब चाहिये; ऐसा उपवास नहीं। वह बड़ा बढ़िया उपवास करते हैं जैसा करना चाहिये। केवल थोड़ा-सा गरम जल लेते हैं और कुछ लेते नहीं हैं। और सात-सात, आठ-आठ दिन का उपवास, बीस-बीस दिन का उपवास। उपवास तो अच्छा करते हैं; लेकिन एक मीटिंग भी करते हैं। उपवास जब पूरा होगा तो उसका Function कितना बड़ा होगा। और उसमें कौन-कौनसी मिठाइयाँ बनेंगी। यह सारे उपवास पर पानी फेरने का काम है। तो यह हमारे समाज का ऐसा तमाशा है।

चलो, साधकों की बात नहीं। भगवान ऋषभदेवजी महाराज सहज भाव से निकल गए। व्याख्यान दिया और 'मैं अब मौन लेकर जा रहा हूँ' ऐसा भी नहीं कहा। निकल गए, बस निकल गए। फिर महीनों तक स्नान नहीं है। किसी ने करा दिया तो ठीक है, नहीं कराया तो नहीं है। इतना तो अपन भी कर लेंगे। स्नान की छुट्टी करना अपने लिये ठंड के दिनों में कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन महीना महीना भोजन भी नहीं है। किसीने आकर के खिला दिया तो ठीक, नहीं तो वह भी नहीं है। किसीने कपड़े पहना दिये तो हैं, उतार लिये तो कोई बात नहीं। ऐसे अवधूत और उनका अंत कहाँ पर है? वन में बैठे हैं और वन में आग लग गई। गर्मी के दिनों में वन में दावाग्नि लगती है, पेड़ों की शाखाओं की एक के ऊपर एक रगड़ खाने के कारण। वायु के कारण। तो उस आग में जितनी सहजता से उन्होंने पेड़ों को जलते हुए देखा, उतनी ही सहजता से अपने हाथ-पावों को भी जलते हुए देखा। हाथ-पग जल रहे हैं, उठकर के भागे नहीं। हाय-हाय भी नहीं किया। चिल्लाये भी नहीं। शांति के साथ जल गये।

देह-देही की मीमांसा

इस देह के अंदर एक देही है; देह का स्वामी जीवात्मा। और वो जीवात्मा प्रवास करता है एक देह से दूसरे देह में, दूसरे से तीसरे में, ऐसा चलता रहता है। उदाहरण मैं बतलाता हूँ। जैसे अपना जन्मदिन है और किसी ने नया हैन्डसेट गिफ्ट में दे दिया मोबाइल का। सिमकार्ड तो अपना ही है। सिम उसमें से निकालते हैं और नये हैन्डसेट में डाल देते हैं। हैन्डसेट बदलते रहते हैं। सिमकार्ड बदलता है क्या? जैसे अनेक हैन्डसेटों में एक सिमकार्ड घूमता है, उसी प्रकार अनेक देहों में एक जीवात्मा घूमता है। नया हैन्डसेट मिलने पर आपको आनंद होता है कि नहीं? पहले मेरा पाँच नंबर का था, अब मुझे छह नंबर वाला मिल गया; तो अच्छा लगता है।

ये देही, ये जीवात्मा वस्तुतः इस देह के भीतर है। है? है लेकिन वो देह नहीं है। **देह उसका उपकरण है।** चश्मे के बिना मैं ये नहीं पढ़ सकता हूँ- लेकिन चश्मा स्वयं नहीं देख पाता। चश्मा मेरी आँख का उपकरण है। जिस प्रकार इस उपकरण को हम उपकरण के रूप में ही समझते हैं, इसे ''मैं'' नहीं समझते। अगर चश्मा टूट जाता है, तो दूसरा ले आते हैं। अतः जैसे ये बाहर का उपकरण है, उसी प्रकार मेरी आँख भी उपकरण है। यह भी ''मैं'' नहीं हूँ। और उसी प्रकार देह के भीतर भी अपने जितने अवयव हैं- लीवर है, ब्रेन है, हार्ट, गुर्दे, फेंफड़े आदि हैं, ये सब भी उपकरण ही हैं। ये चले जाएंगे; तो भी हम तो हैं ही। तो फिर हम वो हैं कैसे? हमारे शास्त्रकारों ने कहा- गहराई में नहीं जाते लेकिन सत्रह तत्त्वों का बना जीवात्मा, जिसमें पंचप्राण, पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, मन और बुद्धि का सामूहिक स्वरूप एक सिमकार्ड। जीवात्मा एक देह से निकलता है, दूसरे में जाता है, दूसरे से निकलता है और तीसरे में जाता है। ऐसा क्रम चलता ही रहता है, जब तक इस क्रम को रोकने की शक्ति अर्जित न हो जाये। देह जल गया, टूट-फूट गया, परंतु उसका कुछ नहीं बिगड़ता है। वह इसमें से निकलेगा, दूसरे में जाएगा। यही व्यवस्था है। **यह व्यवस्था जो है; वह उसके कर्मों के अनुसार है।** यहसुनने के लिये अच्छा है; लेकिन यह हमारा केवल श्रवण है और भगवान ऋषभदेवजी महाराज जैसे लोगोंका अनुभव है। उन्होंने अपने जीवन में इन बातों का अनुभव लिया।

महाराष्ट्र में एक बहुत बड़े महात्मा हुये। उनका नाम था संत

बुराई का जरासा संसर्ग ही आपत्तियों हेतु दरवाजा खोल देता है। – पूज्यपाद

गजानन जी महाराज। वे उच्च कोटि के श्रेष्ठ महात्मा थे। हमारे देश में ऐसे उच्च श्रेणी के संतों की एक परम्परा रही है। एक बार एक विद्वान पंडितजी उनसे मिलने आये। गजानन महाराज अपनी कुटिया में बैठे थे। वहाँ उपस्थित लोगों के सम्मुख उन पंडित जी का सुन्दर प्रवचन हुआ। प्रवचन का विषय क्या था?

**''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि दहति नैनं पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो शोषयति मारुतः।।''** २.२३

भगवद्गीता के इस श्लोक पर उन्होंने जोरदार प्रवचन दिया और बड़ी जोरदार आवाज में दिया। एकदम emphatic । उनके बोलने में पांडित्य भी अभिव्यक्त हो रहा था। वो तो ठीक था; लेकिन उसके साथ-साथ अहंकार भी अभिव्यक्त हो रहा था। प्रवचन पूरा हुआ; तो लोगों ने कहा कि महाराज से मिलेंगे? तो, 'हाँ' कह कर के पंडित जी ने बडे अहंकार से महाराज को प्रणाम किया। प्रणाम करनेवाला भी कैसे कर रहा है; यह ध्यान में आता है। कुछ लोग ऐसे नमस्कार करते हैं जैसे उन्हें जबरन नमस्कार करना पड़ रहा हो। आपके प्रणाम में भी विनय है कि नहीं, यह ध्यान में लाने वाली बात है। एक हंसी तो आती है स्वाभाविक रूप से और एक फोटो खिंचवाते समय हंसते हैं, वह अलग होती है। आप जानते हैं, लेकिन रोज करते है। Smile please, smile please. वह अलग हंसी होती है। ध्यान में आ जाती है। वो पंडितजी आए और बड़े अहंकार से प्रणाम किया। महाराज ने कहा- बैठो। तो वे अकड़ के साथ महाराज के पास ही बैठ गये। हालांकि पंडित तो वे अच्छे थे, लेकिन पांडित्य एक अलग बात होती है और साधुत्व अलग बात। महाराज तो पूर्ण परब्रह्म ही थे। पंडितजी को उनके नीचे बैठना चाहिये था या सामने कुर्सी पर बैठना चाहिये था, लेकिन वे तो उनके पास में ही आकर बैठ गये। महाराज की शक्तियाँ विलक्षण थीं। बातचीत चलती रही। पंडितजी भी अपनी अकड़ के साथ बोलते रहे। इतने में जिस पलंग पर बैठे थे; उसे आग लग गई। पंडितजी उठकर भागने लगे। महाराज ने कहा, ''बैठो, अभी आप व्याख्यान क्या कर के आये हैं? **''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।''** उन्होंने तो महाराज के हाथ पर दिया झटका और भागे। इधर महाराज बैठे रहे और आग भी बुझ गई अपने आप। ये उनकी लीला थी वास्तव में।

मूल बात क्या है? हम सिद्धान्तों को पढ़ते हैं। सिद्धान्त सत्य भी हैं। इसमें भी कोई आशंका नहीं है। लेकिन आज **उन सिद्धान्तों को आचरण में लाकर उनकी वास्तविक अनुभूति करने की हमारी योग्यता नहीं है।** योग्यता नहीं है; तो क्या सिद्धान्तों को छोड़ देना चाहिये? नहीं छोड़ना चाहिये; क्योंकि ये ही सिद्धान्त सत्य है। भगवान के श्रीमुख की ये वाणी है। इससे बढ़िया और कहाँ क्या मिलने वाला है? **सारे संसार में घूम जाइये, आपको गीता जैसा उत्तम और कुछ भी नहीं मिलेगा।** ये इतनी पवित्र वाणी है कि इसका एक-एक शब्द अनमोल है। सत्य बात तो यही है; लेकिन हमारी पात्रता नहीं है; जिसे विकसित करने हेतु साधना करनी ही पड़ेगी।

हमें पात्र बनने के लिये क्या-क्या करना चाहिये; इसका सारा रोड़मैप भगवान ने जो दिया है; उसको उसी क्रम से हम आगे देखेंगे।

क्रमशः

(आगामी अंक में हम देखेंगे - व्यक्तिगत पारिवारिक एवं सामाजिक संतुलन की अनिवार्यता)

बहुमत का सत्य

''एक वृक्ष पर उल्लू बैठा था, उसी पर आकर एक हंस भी बैठ गया और स्वाभाविक रूप से बोला - ''आज सूर्य प्रचंड रूप से चमक रहे हैं। इससे गर्मी तीव्र हो गई है।'' उल्लू ने कहा - 'सूर्य कहाँ है? गर्मी तो अंधकार बढ़ने से होती है, जो इस समय भी हो रही है।' उल्लू की आवाज सुनकर एक बड़े वट वृक्ष पर बैठे अनेक उल्लू वहाँ आकर हंस को मूर्ख बताने लगे और सूर्य के अस्तित्व को स्वीकार न कर हंस पर झपटे। हंस यह कहता हुआ उड़ गया कि - ''यहाँ तुम्हारा बहुमत है, बहुमत में समझदार को सत्य के प्रतिपादन में सफलता मिलना दुष्कर ही है।''

बालकों में संस्कार साधना के ३० वर्ष

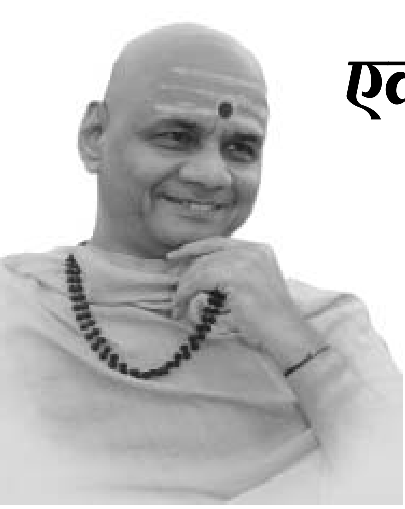

एक स्वप्न जो साकार हुआ!

सद्‌गुणों की साधना में ध्येय ज्योति नित जले।
संग्राममय जीवनधरा पर विजयरथ ले हम चलें।।

अखंड परिव्राजक तथा राष्ट्रीय संत पूज्यवर स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के दर्शनार्थ आये भाविक, असंख्य भक्त, शिष्य तथा कार्यकर्तागण अपने-अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं को सम्मुख रखते हैं, तो सभी समस्याओं का मूल कारण निकलता रहा है, ''संस्कारों की न्यूनता''। यही कारण है और बाल्य-काल से ही योग्य संस्कारों का रोपण यही सही ''उपाय'' है, ऐसा अनुभव हुआ। इस विश्व कल्याण की भावना से श्रद्धेय स्वामीजी द्वारा गीता-परिवार ''संस्कार प्रक्रिया'' का निर्माण हुआ।

तीस वर्ष पूर्व १९८६ में सर्वप्रथम पूज्य स्वामीजी के मार्ग निर्देशन में स्व. ओंकारनाथजी मालपाणी व ललितादेवीजी मालपाणी द्वारा संगमनेर (महाराष्ट्र) में संस्कार कार्य का बीज रोपित किया गया। नामकरण हुआ **''गीता-परिवार''**!

आरंभ में संगमनेर की शालाओं तथा आसपास छोटी-छोटी बस्तियों-कस्बों के बालक-बालिकाओं को अपनी सखियों समवेत जाकर (पूज्यवर द्वारा निर्देशित संस्कार वर्तन का पाठ) मा. ललितादेवीजी स्वयं पढ़ाती थी। एकेक और सखियाँ, फिर उनके अन्य शहरों के परिवारजन, समाज के अन्य सात्त्विक गणों तक इस 'संस्कार' की आवश्यकता का महत्त्व प्रसारित हुआ। फिर माहेश्वरी-मारवाड़ी समाज के सभी संगठनों द्वारा संपूर्ण महाराष्ट्र में और फिर अन्य प्रान्तों में भी निवासी-अधिनिवासी संस्कार शिविर - साप्ताहिक वर्ग आदि के माध्यम से संस्कार सिंचन का कार्य दृष्टिगत होता रहा। इस आयोजन में भारत विकास परिषद जैसे राष्ट्रहित से जुड़े अनेक संगठन भी सम्मिलित होते रहे।

शुरु से ही 'मन-बुद्धि-शरीर' इस त्रयी के संस्कार के आयाम संस्कार प्रक्रिया की रुपरेखा में अंतर्भूत किये गये हैं। बाल्यकाल से ही 'मनुष्य-धर्म' का उचित पालन करने के लिये जो शुद्ध दिनचर्या शास्त्रों में बतायी गई हैं, उसी आधार पर 'सद्‌गुण-वर्तन' के संस्कार तंत्रों का क्रमशः प्रशिक्षण पूज्यश्री के निर्देशन में सुनिश्चित किया गया है।

सन १९८६ से प्रारंभिक संस्कार प्रणाली का कार्य जैसे-जैसे ही विस्तारित होता रहा, इस संस्कार चिकित्सा

गीता परिवार, की कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

※ देश के १७ राज्यों में विस्तार
※ बाल संस्कार विषयक ६४ पुस्तकों का प्रकाशन
※ संगमनेर में बालभवन का निर्माण
※ संगमनेर, कोटा, सोलापुर, अहमदनगर, धुलिया, पानीपत, लखनऊ, हैद्राबाद, जयसिंगपुर इ. स्थानों पर महोत्सवों का आयोजन
※ बालकों के संगमनेर, सुरत, लखनऊ में २५ से अधिक नाटिकाओंका मंचन
※ देशभर में अभिभावकों के लिए ४०० से अधिक व्याख्यानों का आयोजन
※ संगमनेर, धुलिया, औरंगाबाद, जयसिंगपुर, पुणे आदि स्थानों पर २३ करोड सूर्यनमस्कार संकल्पपूर्ति
※ योग सोपान तथा प्रज्ञासंवर्धन प्राणायाम का अनेक स्थानों पर शिक्षक प्रशिक्षण तथा ३० हजार छात्रों को प्रशिक्षण
※ संस्कार सृजन, शालेय पाठ्यक्रम का लखनऊ शाखा द्वारा निर्माण एवं कार्यान्वयन
※ हेमा फाउंडेशन, मुंबई के सहयोग से २५ मूल्य शिक्षा लघुपटों का निर्माण एवं सेंकडों विद्यालयोंमें कार्यान्वयन
※ साहस संस्कार इस योजना के अंतर्गत अनेक गिरी भ्रमण कार्यक्रमोंका आयोजन। लगभग १ लाख बच्चे सम्मिलित।
※ सेंकडों निवासी शिविर तथा हजारो संस्कार वर्गों का आयोजन।
※ ३६ कार्यकर्ता स्वाध्याय शिविरों के माध्यम से २५०० कार्यकर्ताओंका प्रशिक्षण

संतों का जीवन शान्ति से भरा कलष है। – पूज्यपाद

के कार्य में 'संस्कार-चिकित्सक' अर्थात् 'प्रशिक्षित कार्यकर्ता' तथा 'सुनिश्चित लिखित अभ्यासक्रम' की आवश्यकता पू.स्वामीजी के सम्मुख प्रस्तुत की गई। तब संस्कार साहित्य का पहला निर्धारित पाठ्यक्रम '**संस्कार-ज्योति**' नामक पुस्तिका के माध्यम से प्रकाशित हुआ।

क्रमिक विकास :-

कार्यारंभ के पहले एक दो वर्षों में ही स्व. ओंकारनाथजी मालपाणी के एक सुपुत्र **श्री संजय मालपाणी** अपने माता-पिता के साथ आयोजन व्यवस्थापन की सेवा में बड़ी लगन से जुट गये थे। उन्होंने पहले दस वर्षों में पाठ्यक्रम में पूज्यवर के निर्देशानुसार से संस्था-उपासना (श्रीमद्भगवद्गीता - प्रातः व मंगल स्मरण के श्लोक व कई स्तोत्र एवं लघुध्यान-मानसध्यान की प्रक्रिया आदि), गीत (ईशभक्ति व देशभक्ति), खेल योग (विभिन्न बुद्धि व शरीर विकास क्षमता के बैठे व मैदानी), बोधप्रद कथा व सुयोग्य व्यवहार के प्रक्षेपण हेतु प्रात्यक्षिक प्रबोधन इन पाँच माध्यम निश्चित करते हुये इस पर निर्धारित अभ्यासक्रम का साहित्य निर्माण किया। विभिन्न गीत-स्तोत्र-संस्कृत साहित्य की बाल संस्कार पाठमाला की पुस्तिकायें तथा ध्वनिफित एवं संस्कार सरिता, सौरभ, सुधा, सुमन, सुगंध, धन, साधना, विभूति व संत संस्कार आदि संस्कार पुस्तिकाएं प्रकाशित की गयी हैं। भिन्न-भिन्न खेलों का एकत्रित संस्करण 'खेल खजाना' नामक पुस्तिका में उपलब्ध है। संस्थात्मक सभी आयामों के नेतृत्व के लिये श्री संजयजी स्वयं की कुशलता को सिद्ध कर चुके थे। अतः उनको 'राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष' पद प्रदान किया गया। संजू भैय्या ने तदनंतर बाल मानस शाखा में विद्या वाचस्पति ग्रहण कर ली तथा अभिभावकों के लिये 'दो शब्द माता-पिता के लिए' तथा 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' जैसे व्याख्यान उनके द्वारा बड़े उद्बोधक रहते हैं। जो कि संपूर्ण देश भर में सैंकडों की संख्या में आयोजित हुए हैं।

पहले पाँच-दस वर्षों में एक तरफ अभ्यासक्रम का निर्माण होता रहा एवं दूसरी ओर प्रशिक्षित, प्रशिक्षक व कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु 'संस्कार कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण-स्वाध्याय शिविर' शहर-जिला-राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होते रहे। ऐसे छोटे-बड़े आयोजनों में दस हजार से अधिक कार्यकर्त्ता संस्कार प्रक्रिया का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

आरंभ से तीन-चार वर्षो तक स्वयं पूज्य गुरुजी आवासी बाल-बालिका व युवती संस्कार शिविरों में प्रधानतः पूर्ण समय व प्रत्यक्ष मार्गदर्शन के लिये उपस्थित रहते थे। आगे आपके द्वारा प्रेषित कथा-ज्ञान-वाग्यज्ञ एवं गठित अन्य संगठनों का कार्यभार बढ़ता गया, तो केवल प्रांत व राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण स्वाध्याय शिविरों में आपका अमूल्य दिशादर्शन कुछ सत्रों में उपलब्ध होता रहा। इसी काल में कार्यकर्त्ताओं की मानसिक सिद्धता के वैचारिक मार्गदर्शन के लिये आवश्यक ऐसी 'पंचसूत्री' (कार्य के पाँच आधार) संगमनेर में आयोजित प्रथम कार्यकर्त्ता शिविर में पूज्य स्वामीजी ने उद्बोधित की; जो राजस्थान की समर्पित आयोजक कार्यकर्त्री सौ. निर्मला दामोदर मारू द्वारा लिपिबद्ध की गयी। यह 'संस्कार पाथेय' व तदनंतर 'संस्कार प्रेरणा' नामक पुस्तिका के माध्यम से प्रकाशित की गयी। **ये पाँच सूत्र- ईश्वर भक्ति, भगवद्गीता, भारत माता, विज्ञान-दृष्टि और स्वामी विवेकानंद - यह गीता परिवार के संस्कार प्रक्रिया के मुख्य पाँच आधार स्तंभ हैं।**

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें।।

इस हेतु गीता परिवार के प्रत्येक घटक द्वारा संस्कार सिंचन होता रहे, इस पर पूज्य स्वामीजी का कर्मठ रहता है।

आरंभ से ही पूज्यवर द्वारा दूरदृष्टि से विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों को संगठन से जोड़ा गया है। नागपुर के संस्कृतज्ञ **स्व. श्री. भा. वर्णेकर** शास्त्रीजी, योग व युद्ध के संशोधन आचार्य **श्री सुरेश जाधव सर** (सोलापुर) पूणे के खेल विशेज्ञ **स्व. राजगुरु सर** ऐसे विभिन्न क्षेत्रों

के विशेषज्ञ साधकों द्वारा भिन्न-भिन्न अभ्यासक्रम रचित किये गये। श्रीमद्भगवद्गीता एवं अन्य योग्य ग्रन्थों के संदर्भ में रचित मस्तिष्क व ज्ञानेंद्रियों की क्षमता विकास के योग तंत्रों का अभ्यासक्रम 'प्रज्ञा संवर्द्धन' यह योग एवं युद्धाचार्य श्री सुरेश जाधव द्वारा तथा विभिन्न बुद्धि व शरीर क्षमता विकास के खेलों का संकलन 'खेल खजाना' नामक पुस्तक स्व. राजगुरु सर द्वारा लिखित व गीता परिवार द्वारा प्रकाशित किये गये है। इसी श्रृंखला में उत्तरप्रदेश-लखनऊ के श्रद्धावान व आधुनिक तंत्रविज्ञान की कुशलता प्राप्त प्रेरक युवा व्यक्तित्व **डॉ. आशु भैय्या गोयल** ने आरंभिक मूल अभ्यासक्रम पुस्तिका में से आयुअनुसार कौन से सद्गुण धारण किये जाने चाहिये, इसका अभ्यासक्रम क्रमशः कक्षानुसार विभाजित किया। जो 'संस्कार सृजन' के नाम से जाना जाता है तथा शालाओं के मूल्यसंवर्द्धन तालिका में समाविष्ट करने से अधिकाधिक बालकों में सहजता से इस पाठ्यक्रम को संस्कारों का सिंचन हो जाता है।

इसी श्रृंखला में मुंबई के **श्री महेंद्रभाई काबरा** जो स्वयं एक कुशल प्रभावी प्रयोजक हैं तथा समाज स्थिति का सर्वेक्षण करके क्या परिवर्तन होना चाहिये, इसका हृदय से अभ्यास करते रहते हैं। आपने वर्तमान आधुनिक जन-जीवन व तंत्र-विज्ञान युग की माँग देखते हुये सांस्कृतिक डिजिटल माध्यम का उपयोग करते हुये नैतिक मूल्यवर्धन संदेश के लघु चित्रपट (शॉर्ट फिल्म्स) का निर्माण किया। हेमा फौंडेशन द्वारा निर्मित इस दृश्यश्राव्य लघुपट सीडीज के कारण अनेक नगर-महानगरों के प्रशालाओं के बालक ई-लर्निंग द्वारा संस्कारतंत्रों का ग्रहण बड़ी मात्रा में कर रहे हैं, यह एक अच्छी उपलब्धि वर्ष (२०१६) गीता-परिवार की प्रेरणा से हुई है।

संस्कार अभ्यासक्रम की अनेक पुस्तिकाएँ व ऑडीओ साहित्य द्वारा भारत में सर्वदूर प्रसारित संस्कार प्रक्रिया में 'संस्कार सृजन', 'नैतिक मूल्य सीडीज' के साथ 'प्रज्ञा संवर्द्धन', यह योग अभ्यासक्रम भी लाखों बालकों तक पहुँचाया गया है। लय, राज, हठ व क्रियायोग के साधक तथा शिवस्वरोदय के अभ्यासक एवं विगत पैंतीस वर्षों से युद्धकला की साधना करने वाले संशोधकवृत्ति के आचार्य सुरेश जाधवजी द्वारा रचित प्रज्ञा व ज्ञानेंद्रियाँ क्षमता वृद्धि का अभ्यास गीता-परिवार की विस्तारक व योगप्रशिक्षिका **प्रमिलाताई माहेश्वरी** द्वारा अनेक प्रांतों के बालकों तक पहुँचाया गया है। महाराष्ट्र के जयसिंगपुर, संगमनेर तथा धुलियाँ, नासिक, सोलापुर, नगर, जालना, सातारा व मुंबई जिले के जिला परिषद् शिक्षण विभाग व विशेष बालक संचालनालय के माध्यम से एवं गोवा प्रांत क्रीड़ा संचालनालय द्वारा लगभग दो-ढाई हजार शिक्षकों को श्री जाधव सर ने 'प्रज्ञासंवर्द्धन' का प्रशिक्षण दिया है। अब तक उन शिक्षकों द्वारा इस यौगिक अभ्यासक्रम का प्रशिक्षण ग्रामीण व शहर स्तर के लाखों बालकों के लिये प्रदान किया गया है। सन् २०१७ में महाराष्ट्र के विदर्भ-मराठवाडा व प. महाराष्ट्र के अन्य जिलों के एक हजार शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की योजना कार्यान्वित है।

इसी के साथ हैदराबाद निवासी **श्री शैलेश भैय्या गुप्ता** रचित योगासन का क्रमबद्ध अभ्यास 'योगसोपान' नामक पुस्तिकाओं के माध्यम से प्रकाशित किया गया। संगमनेर में ध्रुव अकादमी में मुख्यतः तथा संगमनेर व अकोला तहसील के प्रशालाओं में **नीलेशभाई पठाडे** व **दत्ताभाऊ भांदुर्गे** इन युवा योग व युद्ध प्रशिक्षकों द्वारा दस हजार से भी अधिक बालकों को सिखाया गया है। इन्हीं प्रशिक्षित बालकों द्वारा गीता-परिवार के त्रिदशकपूर्ति निमित्त आयोजित राष्ट्रीय संस्कार महोत्सव में पूज्य स्वामी रामदेव बाबा के सम्मुख सांगीतिक योगसोपान का प्रात्याक्षिक प्रदर्शित किया गया।

संस्कार प्रक्रिया का एक मुख्य आयाम है - सांस्कृतिक माध्यम। संजू भैय्या की अदृश्य शक्ति उनकी अर्धांगिनी व नृत्य-नाट्य में कौशल प्राप्त **सौ. अनुराधा भाभीजी** तथा पं.बंगाल के आवासी शिविरों की देन- अनेक कौशलयुक्त नवयुवक सृजनशील **श्री. गिरीश डागा** व इनके साथ ध्रुव अकादमी के व्यवस्थापक **श्री. सचिन भाऊ जोशी** ने 'संस्कार बाल-भवन' का संचालन

श्रद्धा मनुष्य के जीवन में चमत्कार पैदा कर देती है। – पूज्यपाद

अभिनव व सहज पद्धति से सँभाला हुआ है।

इस संस्कार कार्य को दक्षिण दिशा में आंध्रप्रदेश में विस्तारित करने में **श्री. हरिनारायणजी व्यास** के नेतृत्व में **श्री. अरुण भैय्या गौड़,** राजस्थान में **श्री दामोदरजी मारू** के नेतृत्व में गुजरात में **श्रीमती विमलाजी साबू,** दिल्ली में **श्रीमती सरिता रानीजी** व हरियाणा में **श्रीमती मीनाक्षीजी गुप्ता,** कर्नाटक में **श्रीमती संतोषी सोमाणी, श्वेता मालू** व **सारिका बजाज** तथा गोवा में **ईश्वर कुबल,** ये सभी प्रधानतः कार्यरत रहते हैं। पुणे में सुरभि सेवा परिवार के **श्री. अशोक पारीक** संस्कार प्रणाली के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। संगठन की सारी प्रशासकीय व्यवस्था संगमनेर में मुख्य कार्यालय के अंतर्गत सुचारु रूप से स्थापित है।

ऐसे चरित्रनिर्माण एवं विश्वकल्याण के संस्कार कार्य में पूज्यवर ने आरंभ से ही युवावस्था में एक युद्धकला प्रशिक्षक के नाते मुझे (सौ. संगीता सुरेश जाधव) सेवारत होने का सुअवसर दिया। आदरणीय जाधव सर के साथ तीस वर्ष पूर्व इस संस्कार यात्रा पर मैं निकल पड़ी और शनैःशनैः क्रमशः अन्य संस्कार आयाम सीखती–सिखाती गयी। युद्धकलाशिक्षक से संस्कृत खेल–उपासना–कथा–प्रात्यक्षिक प्रबोधन की प्रशिक्षिका, फिर मुख्य प्रशिक्षिका के नाते आवासी शिविरों का प्रातः से रात्रि तक दिनक्रम अनुशासित करती रही। जैसे ही कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु स्वाध्याय शिविरों का आयोजन होने लगा, सहज ही संजयजी, जाधवजी और मैं , हम सब पूर्वानुभव व कौशल के कारण अपना–अपना कार्य संचालित करते रहे। स्वयं स्वामीजी के सानिध्य में और आपके प्रत्यक्ष श्रीचरणों में अधिक काल सेवा अर्पित करने के कारण अनेक विषयों का अभ्यास करके उद्‌बोधन करने की वक्तृत्व शैली हमें सौभाग्य से प्राप्त हुई है। अब हमारा श्वास है 'संस्कार कार्य' यही 'गीता–परिवार' अनेक कार्यकर्त्ताओं के जीवन–क्रम विकास का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है और यही वास्तवदर्शी सत्य है। शुद्धाचरण के प्रशिक्षण का सहज सुंदर प्रशिक्षण देने वाले इस विशाल परिवार में सभी का स्वागत है।

पूज्य स्वामीजी की कृपा से इस संस्कार गंगा में प्रवाहित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, यही जीवन की सफलता का आधार है। प्राचीन परंपराओं के साथ आधुनिक तंत्र ज्ञान तोड़कर, मनुष्य जीवनयापन के इस संस्कार कार्य के लिये पूज्य श्री के चरणकमलों में हम नतमस्तक हैं।

सौ. संगीता सुरेशजी जाधव
विस्तारक एवं संस्कार–संरक्षण प्रशिक्षक
गीता–परिवार, सोलापुर

'गीता परिवार' में आपका स्वागत है!

- अपने स्थान पर चल रहे गीता परिवार के कार्य में सहभागी हों अथवा कार्य की शुरुआत करें।
- किसी भी कार्य की सफलता व नियमितता के लिए धन आवश्यक है। अतः इस राष्ट्रीय तथा भगवद्‌कार्य हेतु आर्थिक योगदान दे सकते हैं।
- जन्मदिवस के अवसर गीता परिवार के साहित्य की भेंट दे सकते हैं।
- गीता परिवार द्वारा संकल्पित पालक कार्यशालाओं, बाल रामकथा, प्राणायाम वर्गों का आयोजन कर सकते हैं।
- अपने क्षेत्र में संस्कार–बालभवन का उपक्रम आरंभ कर सकते हैं।
- अपने परिचित विद्यालयों में गीता परिवार द्वारा प्रकल्पित उपक्रम आयोजन कर सकते हैं।

ईर्ष्यालु का कोई पड़ोसी और कायर का कोई मित्र नहीं होता। – पूज्यपाद

वातावरण में सुगंध अब भी शेष है

* दो दिन पहले संगमनेर के एक विद्यालय में संपन्न फैंसी ड्रेस स्पर्धा का एक छायाचित्र देखा। एक छोटा सा बच्चा बाबा रामदेवजी की भूमिका करते हुये शीर्षासन कर रहा था।
* मेरे एक मित्र ने अपना अनुभव बताते हुये कहा कि एक दिन उनके मोहल्ले में बच्चे स्टैच्यु-स्टैच्यु का खेल खेल रहे थे। स्टैच्यु कहते ही एक बालक ने अर्जुन के रथ का सारथ्य करने वाले पार्थसारथी के समान शंखनाद करने की मुद्रा बना ली।
* यही नहीं; जब मैं अपने फोटोग्राफर के स्टूडियो में योगेश्वर महानाट्य के वीडियो की एडिटिंग के लिये गया, तो वहां उसके सहायक को जो गीत गुनगुनाते हुये सुना, वह था पूज्य स्वामी गोविन्ददेवगिरिजी द्वारा रचित गीत – जय भारत माँ, जय गीता माँ।

संगमनेर में गीता परिवार की त्रिदशकपूर्ति महोत्सव पर आयोजित राष्ट्रीय योग-संस्कार महोत्सव को बीते एक मास हो गया है; लेकिन योग-संस्कार की सुगंध वातावरण में अब भी कायम है। यह चमत्कार है गीता परिवार का।

यह चमत्कार है देश के दो महान संतों स्वामी गोविन्ददेवगिरिजी महाराज और योग महर्षि बाबा रामदेवजी महाराज की पावन उपस्थिति का। किसी संस्था के लिये तीन दशक वैसे तो बहुत बड़ा समय नहीं होता; लेकिन गीता परिवार के लिये तीन दशक विशेष है; क्योंकि बाल-संस्कार के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण का कार्य करने वाली अपनी संस्था सदैव दो-तीन पीढ़ियाँ आगे ही रहती है। अर्थात इस त्रिदशकपूर्ति महोत्सव के साथ अगले बीस-तीस वर्ष में देश को बनाने वाली पीढ़ी का संस्कार हुआ है, उनको भगवदभक्ति, भगवदगीता, भारतमाता, विज्ञान-दृष्टि और स्वामी विवेकानंद के आदर्श का पाथेय मिला है।

बात तैयारी की :-

दि. ९ और १० दिसंबर २०१६ को संगमनेर में संपन्न गीता परिवार का त्रिदशकपूर्ति महोत्सव औपचारिक रूप से तो दो दिनों का ही था; लेकिन गीता परिवार के कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी के कुशल नेतृत्व और सर्वसमावेशक नियोजन के फलस्वरूप संगमनेर -निवासी गत दो महीने से इस उत्सव को जी रहे थे। शहर की अनेक छोटी-बड़ी संस्थाएँ और हर समाज के बंधु-भगिनी गीता परिवार के कार्यकर्त्ताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रहे थे। कोई पद नहीं, कोई व्यक्तिगत प्रचार नहीं, मंच पर माला पहनने की अपेक्षा भी नहीं। बस गीता परिवार के प्रति प्रेम और पूज्य स्वामीजी के प्रति निष्ठा का ही भाव था; जिसने गीता परिवार को एक ऐसा

अहं और अपेक्षा जीवन को नर्क बना देती है। – पूज्यपाद

सागर बना दिया है, जिसमें शहर की सभी संस्थाएँ, सभी सम्प्रदाय और समाज के सभी वर्ग मिलकर एकरूप हो जाते हैं।

भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम – जागती आँखों से बडे सपने देखने – की बात कहते थे। पूज्य स्वामीजी ने गीता परिवार की स्थापना भी एक बड़े महान स्वप्न के साथ की थी। गीता परिवार के उस छोटे से–पौधे को पूज्य स्वामीजी ने अपने प्रेम, परिश्रम और प्रेरणा से पोषित किया और हजारों कार्यकर्त्ताओं का निर्माण किया। उन्हीं के इस महान स्वप्न को 'परिवार' के कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी ने अपने आँखों में संजो लिया और पूज्य स्वामीजी की कृपा और आशीर्वाद से गीता परिवार को कुशल नेतृत्व दिया।

त्रिदशकपूर्ति महोत्सव की संकल्पना, नियोजन और कार्यान्वयन के लिये कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी (संजू भैया) ने दिन–रात एक करके परिश्रम की पराकाष्ठा कर दी। १२००० बालक–बालिकाओं द्वारा एक साथ सामूहिक संगीतमय योग, गीता परिवार के कार्य और आदर्शों को प्रस्तुत करने वाली शोभायात्रा, सभी शाखाओं के अतिथि बालक–बालिकाओं की भी सहभागिता, कार्यकर्ताओं में विचारों का आदान–प्रदान और एक भव्य महानाट्य के साथ महोत्सव का समापन ऐसी सुंदर कल्पना करना जितना आसान था उससे कई गुना कठिन था उस कल्पना को साकार करना। किन्तु संजू भैया ने उसमें योग करने वाले बच्चों को तिरंगा झंडे का रूप देने की एक नयी संकल्पना से इस कार्य को स्वयं के लिये और भी चुनौतीपूर्ण बना दिया। बहुत ही कम समय में इन सारी योजनाओं को मूर्त रूप देना और उसके साथ–साथ ''योग–सोपान'' पुस्तक का प्रकाशन और सभी शाखाओं से आने वाले अतिथियों के रहने एवं खाने–पीने की उत्तम व्यवस्था भी करनी थी। श्रीकृष्ण की कृपा और पूज्य स्वामीजी के आशीर्वाद के साथ संजू भैया के अद्भुत नेतृत्व ने असंभव को संभव कर दिखाया। स्वयं पीछे रहकर भी सारे कार्य अपनी योजना के अनुसार करवा लेना, एक जगह रहकर कार्य करने वाले सभी कार्यकर्त्ताओं के साथ भी रहना, कहीं कुछ कमी रह गई तो उसे तुरंत समझ कर समझा देना, आनेवाली समस्या और चुनौती का पहले से अनुमान लगाकर उसके लिये भी समाधान के उपाय तैयार रखना और ''**मैं नहीं हम**'' के भाव से ये सब करते हुये अपने कार्यकर्त्ताओं को ही आगे रखना। यही वह अद्भुत कार्यशैली है; जो संजू भैया को सहज ही सभी का आदर्श बना देती है और जिसने इस महोत्सव को अभूतपूर्व ऐतिहासिक सफलता दिलाई।

एक लघु भारत का अवतरण

योग संस्कार महोत्सव के निमित्त संगमनेर जैसे छोटे शहर में एक लघु भारत का दर्शन सबने किया। उत्तर–दक्षिण–पूरब–पश्चिम सभी दिशाओं से बालक–बालिकाएं और कार्यकर्ता यहाँ आये। गीता परिवार के सचिव श्री श्रीकांत भैया कासट और राजस्थान युवक मंडल के कार्यकर्त्ताओं ने भोजन और निवास व्यवस्था संभाली हुई थी। ९ दिसंबर की रात्रि को सभी शाखा के कार्यकर्त्ताओं

सम्पन्न कार्यक्रमों पर एक दृष्टि !

* मंच पर १८ X ४० की विशाल LED * तीन मंचों पर प्रस्तुतीकरण
* आकर्षक वेश–भूषा, सौम्य रूपसज्जा, रोमहर्षक प्रकाश–संयोजन
* श्रीकृष्ण चरित्र के अभिमंचन की अभूतपूर्व संकल्पना
प्रस्तुति – ध्रुद अकेडेसी, संगमनेर

कार्यक्रमः शोभायात्रा :

विभिन्न प्रकार की आकर्षक झांकियों के साथ ही गीता के १६ वें अध्याय में वर्णित देवी गुण सम्पदा को प्रस्तुत करने वाली झांकियाँ, जो सबके विशेष आकर्षण का केन्द्र रहीं।
दिनांकः शनिवार दि. १० दिसम्बर २०१६,
स्थानः जाणता राजा मैदान, संगमनेर, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

योग महोत्सव

* माल्यार्पण * १२५०० छात्रों का संगीतमय योग की प्रस्तुति
* नृत्यवंदना * शौर्य संस्कार प्रात्यक्षिक * गीता परिवार नृत्य
* आशीर्वचन – स्वामी गोविंददेवगिरि महाराज
* योग सोपान अभ्यासक्रम प्रकाशन * समूहगान
* उद्‌बोधन – पू. योगमहर्षि स्वामी रामदेवबाबा
* ऋणनिर्देश * वंदेमातरम्

योगेश्वर महानाट्य

* श्रीकृष्ण के जीवन के माध्यम से गीता ज्ञान का सरल निरूपण
* जीवंत अभिनय, सार्थक संवाद, मनमोहक नृत्य, मधुर गीत, भावपूर्ण पार्श्वसंगीत * ३५० बाल–कलाकारों का सहभाग
* १५० बाल–कलाकारों की नृत्य प्रस्तुति
* भीष्म की शरशय्या * भव्य रथ पर कृष्ण–अर्जुन संवाद
* कालिया–मर्दन
* विश्वरूप दर्शन का रोमांचकारी प्रस्तुतीकरण

तप का प्रथम सोपान निश्चलता है। – पूज्यपाद

ने अपने कार्य का और वहाँ से आये बच्चों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। सोलापुर, कोटा, हैदराबाद, जयसिंगपुर, दिल्ली, मुंबई, सूरत, लखनऊ, गुलबर्गा, पानीपत और महाराष्ट्र के अनेक स्थानों के अपने कार्यकर्त्ता भगिनी-बंधुओं ने अपने-अपने कार्यानुभव सबके साथ साझा करके, सभी को अनुभव-समृद्ध किया। गीता परिवार के संस्कारों से समृद्ध बालक-बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम ने सभी का मन मोह लिया। हैदराबाद शाखा के श्री अरुणजी गौड़ दो दिन पूर्व ही आ गये थे और उन्होंने बड़े ही प्रभावी रूप से इस कार्यक्रम का सूत्र-संचालन किया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम ने सभी को ऊर्जा और उत्साह से भर दिया और अब सभी को प्रतीक्षा थी, दूसरे दिन निकलने वाली शोभायात्रा की।

भव्य शोभायात्रा में गीता परिवार के विराट रूप का दर्शनः-

१० दिसंबर की प्रभात अलग-अलग रंगों की छटा बिखेरते हुए आई। हैदराबाद से आये बंधु दक्षिण भारतीय मुंडू धोती पहने हुये शोभायमान हो रहे थे; तो राजस्थान के बच्चे अपनी रंग-बिरंगे पौशाकों में चमक रहे थे। उत्साह तो इतना था कि शोभायात्रा के समय से पूर्व ही सभी कोई तैयार हो चुके थे।

मातुश्री रुक्मिणी दामोदर मालपाणी विद्यालय के १५० बच्चे शोभायात्रा के मार्ग पर आगे-आगे रंगोली निकालते हुये चल रहे थे, तो स्वच्छता-पथक पीछे-पीछे मार्ग को स्वच्छ करते हुये आगे बढ़ रहा था। अनेक प्रकार की झाँकियां शोभायात्रा की भव्यता में चार-चाँद लगा रही थीं। छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, झाँसी की रानी घोड़े पर बैठे आगे-आगे चल रही थी। लखनऊ और जयसिंगपुर के बच्चे भगवद्गीता के १६ वें अध्याय पर आधारित दैवीगुण-सम्पदा को प्रस्तुत कर रहे थे। कोटा का पथक मधुर भजन और सुन्दर नृत्य प्रस्तुत कर रहा था; जिसमें बीच-बीच में श्री गोविन्दजी माहेश्वरी भी अपने स्वर की मिठास घोलते हुये दिखे। संगमनेर के ध्रुव अकादमी का ढोल-ताशा पथक तो शौर्य और साहस की गर्जना करता हुआ सभी को रोमांचित कर रहा था। शिवाजी राज्याभिषेक, गोवर्धनधारी श्रीकृष्ण और अर्जुन को गीता का उपदेश देते हुये पार्थसारथी की झाँकियाँ, गीता के विभिन्न योग का संदेश दे रही थीं।

कार्यकर्ता बंधु केशरिया जाकेट और केशरिया फेटा पहने हुये थे; तो केशरिया साड़ी पहने कार्यकर्ता भगिनियां अलग ही शोभा बढ़ा रही थी। जैसे-जैसे शोभायात्रा आगे बढ़ती गई वैसे-वैसे गेंदाफूल की केशरिया पंखुडियां रास्ते पर कालीन बिछाती गई। सब कुछ भगवामय हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे पूरा संगमनेर शोभायात्रा के लिये पलक-पाँवड़े बिछाए बैठा था। संगमनेर निवासियों के प्रेम को देख अतिथि कार्यकर्तागण गद्-गद् हो रहे थे; तो विभिन्न प्रदेशों से आये कार्यकर्ताओं और बच्चों का स्वागत नागरिक इस प्रकार कर रहे थे जैसे वे उन्हीं के घर के मेहमान हों।

लेकिन इन सबके बीच भी आँखें किसी को ढूंढ रही थीं। हमारे पूज्य स्वामीजी कहाँ हैं? उनके दर्शन न हुए और उन्होंने यदि शोभायात्रा न देखी तो ये सारे रंग फीके पड जायेंगे। इसी विचार में डूबा मैं भी आगे बढ़ रहा था तभी एक स्थान पर मेरे हाथ अपने-आप जुड गये। और मैं नतमस्तक हो गया। पूज्य स्वामीजी एक स्थान पर बैठकर शोभायात्रा का अवलोकन कर रहे थे। हर एक झांकी और हर एक कार्यकर्ता को आशीर्वाद दे रहे थे। हाथ उठाकर शोभायात्रा का स्वागत कर रहे थे। मालपाणी उद्योग समूह के प्रमुख श्री राजेशजी मालपाणी और आदरणीया ललिताजी मालपाणी उनके साथ खड़े थे। सभी के मुखमंडल पर एक विशेष प्रसन्नता और संतुष्टि झलक रही थी। सूर्य के तेज से चन्द्रमा जैसे प्रकाशमान हो जाता है, वैसे ही पूज्य स्वामीजी का दिव्य तेज इस शोभायात्रा को तेजस्वी बना रहा था।

कुछ देर बाद अपनी कलाई की घडी पर समय देखते हुये, संजू भैया दिखे ! गीता परिवार के हर एक मूल्य को उन्होंने अपने जीवन में प्रत्यक्ष उतार लिया है। इसलिये उनका ध्यान इस ओर है कि जिस तरह शोभायात्रा समय से निकली, उसी तरह समापन भी समय की पाबंदी

से हो। और ऐसा हुआ भी।

दोपहर के मुख्य कार्यक्रम के स्थल 'जाणता राजा' मैदान पर आकर शोभायात्रा समय पर पूरी हो गयी।

> हम लोग जिस मार्ग पर चलते रहे, वह इस देश को जगाने का मार्ग है। ईश्वर-भक्ति, भारतमाता, भगवद्गीता, विज्ञान-दृष्टि और स्वामी विवेकानंद के आदर्श-यह पांच सूत्र लेकर के हम चले। पूज्य रामदेवजी महाराज में हम इन पाँचों सूत्रों को साकार देखते हैं।
> **– आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी**

पूज्य बाबा रामदेव और पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरीजी की पावन उपस्थिति अर्थात योग-संस्कार महोत्सव–

शोभायात्रा की समाप्ति पर मैं वहीं रुक गया, संगमनेर के इस मैदान का नामकरण गीता परिवार द्वारा आयोजित 'जाणता राजा' महानाट्य के कारण ही हुआ था। गीता परिवार का मुख्य राष्ट्रीय कार्यालय (संस्कार बाल भवन) भी यहीं स्थित है। संगमनेर के कार्यकर्ता वहाँ अब अंतिम तैयारियों की जांच कर रहे थे। लेकिन हडबडाहट बिलकुल नहीं थी। जैसे कोई विद्यार्थी साल भर मेहनत करके परीक्षा-कक्ष में बडी उत्सुकता से प्रश्न-पत्र की प्रतीक्षा करता है, वैसे ही सभी कार्यकर्ता पूरे आत्मविश्वास के साथ उन १२००० बच्चों की प्रतीक्षा कर रहे थे जो इस मैदान को तिरंगा कर देने वाले थे। भव्य व्यासपीठ के समक्ष सजे-धजे खाली मैदान को देख कर कुछ ही पलों में सामने आने वाले दृश्य की कल्पना में मेरा मन भी खो गया।

धीरे-धीरे बसों और अन्य वाहनों में बच्चे महोत्सव-स्थल के पास पहुँचने लगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक पूरे अनुशासन और लगन के साथ पार्किंग व्यवस्था देख रहे थे। केशरिया, सफेद और हरे रंग की छटा मैदान में बिखरने लगी। जैसे-जैसे बच्चे मैदान में आते गये, वैसे-वैसे तिरंगे झंडे का स्वरूप साकार होता हुआ दिखने लगा। बच्चों के साथ कार्यकर्त्ता और शिक्षकों का होना भी अनिवार्य था, इसलिये ऐसे उनको भी उनके समूह के अनुसार ही टी-शर्ट दिये गये थे। परिवार के कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी काबरा ने हेमा फाउंडेशन के माध्यम से इन टी-शर्ट को प्रायोजित किया था।

पिछले तीन महीने से संगमनेर के अनेक विद्यालयों और देश भर से आये बच्चों ने संगीतमय योगासन का अभ्यास किया था। गीता-परिवार के पूर्णकालिक प्रचारक श्री. दत्ता भांदुर्गे और कार्यकर्ता श्री. नीलेश पठाडे छह महीने से इसी दिन के लिये समर्पित होकर कार्य कर रहे थे। इन बच्चों की बैठक व्यवस्था में मुंबई के कार्यकर्ता श्री करण मित्तल ने भी विशेष परिश्रम किया था। पूज्य स्वामीजी एक-एक कार्यकर्ता से बात कर रहे थे। इसके बाद प्रत्येक केंद्र – शाखा से आये कार्यकर्ताओं को मंच पर बुलाकर स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया। गीता-परिवार के कार्यकर्ता यश या सम्मान की आशा से तो कभी कार्य नहीं करते; किन्तु स्वामीजी का आशीर्वाद पाकर सभी धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमः–

योग महर्षि बाबा रामदेवजी के आगमन के साथ मुख्य कार्यक्रम की शुरुआत हुई। गीता परिवार संचालित संस्कार बालभवन की बालिकाओं ने पूज्य स्वामीजी द्वारा रचित '**गीता-परिवार हमारा**' इस गीत पर मनोहारी ओड़िसी नृत्य प्रस्तुत किया तो सौ. संगीता जाधव के नेतृत्व में सोलापुर शाखा के शौर्य पथक ने नियुद्ध और दण्डयुद्ध के प्रदर्शन ने सभी में वीररस का संचार कर दिया। गीता परिवार के उपाध्यक्ष श्री सुरेशजी जाधव गीता परिवार के संस्कार शिविरों के माध्यम से यही शौर्य-संस्कार तो देश भर के बच्चों को देते आये हैं।

इसके पश्चात् संस्कार बालभवन के बच्चों ने भरतनाट्यम् नृत्य प्रस्तुत किया। स्वयं पूज्य स्वामीजी द्वारा रचित (गीता-परिवार हमारा) गीत, जिसे प्रसिद्ध गायक श्री रवीन्द्र साठे ने स्वरबद्ध किया था, वह गीत तो सभी को भाव-विभोर करने वाला और गीता परिवार के कार्य और ध्येय को उजागर करने वाला था। इस गीत पर बालभवन की छात्राओं द्वारा मनोहारी ओड़िसी नृत्य

प्रस्तुत किया गया। सौ. अनुराधा भाभी मालपाणी के मार्गदर्शन में श्री पवित्र भट्ट, श्री प्रभात स्वाइन और श्रीमती सोनाली महापात्रा द्वारा संयोजित इन दोनों नृत्यों ने दर्शकों का मन जीत लिया।

> एक महात्मा का, एक विद्वान योगी-आचार्य का, एक संन्यासी का, एक तपस्वी का, एक आप्त पुरुष का महान् तपस्वी जीवन.. उसके अनेक आयाम और उसमें बाल संस्कार का यह पुनीत कार्य। पूज्य स्वामीजी का मैं वंदन करता हूँ।
>
> – **बाबा रामदेव जी**

परिवार की स्थापना करते हुये देखा था। उन्होंने कहा कि उन्हें भी लगता था और मुझे भी लगता था कि बाल संस्कार के अभाव में देश के भविष्य को संवारा नहीं जा सकता है। कार्य की शुरुआत की काफिला बढ़ता गया लेकिन उसकी पूर्णता आज इस रूप में हुई है कि योगमहर्षि परम आदरणीय पूज्यश्री बाबा रामदेव जी महाराज यहाँ पर पधारे। हम लोगों को पता होना चाहिये कि देश में –अच्छे दिन– लाने के लिये चाणक्य की और समर्थ रामदास गुरु की भूमिका का निर्वाह करने वाले पूज्य रामदेव बाबा ही हैं और हमारा सौभाग्य है कि वे यहाँ पधारे। इस राष्ट्र को गतिमान करना, इसे पुनः परम वैभव के शिखर पर ले जाना। और उसके लिये इस समाज को जगाना– इसी एक धुन को लेकर के एक महात्मा अपने आश्रम से निकल पड़े। हमने जो कुछ ,गतिविधियाँ देखीं तो भारत को प्रगति पथ पर जाता हुआ अनुभव कर रहे हैं। उसके मूल में जिन लोगों का श्रम है, उनमें अग्रगण्य बाबा रामदेवजी महाराज है।

परम पूज्य स्वामीजी ने आगे कहा, हम लोग जिस मार्ग पर चलते रहे, वह इस देश को जगाने का मार्ग है। ईश्वर–भक्ति, भारतमाता, भगवद्गीता, विज्ञान–दृष्टि और स्वामी विवेकानंद के आदर्श – ये पांच सूत्र लेकर के हम चले। पूज्य रामदेवजी महाराज में हम इन पाँचों सूत्रों को साकार देखते हैं।

देश में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्रांति का शंखनाद करने वाले बाबा रामदेव जी के साथ कल मैं कुरुक्षेत्र में था। भगवद्गीता की जन्मभूमि से गीता परिवार की जन्मभूमि का दर्शन करने आज बाबा रामदेव यहाँ आये हैं।''**गीता पढ़ें पढ़ावें–जीवन में लावें**'' यही गीता परिवार का मिशन स्टेटमेंट है। गीता परिवार का मार्ग इस देश के पुरुषार्थ को जगाने का मार्ग है।

पुस्तक विमोचन :–

हैदराबाद के श्री शैलेशजी गुप्ता द्वारा निर्मित योग के पाठ्यक्रम–योग सोपान – पुस्तक का विमोचन योग महर्षि बाबा रामदेवजी एवं स्वामी गोविंददेव गिरि जी द्वारा किया गया। कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी की संकल्पना से निर्मित योग का यह पाठ्यक्रम बालकों के लिये ही नहीं; बल्कि योगाभ्यास करने के इच्छुक सभी के लिये उपयोगी है। शैलेश भैया, श्री दत्ता भांदुर्गे तथा श्री नीलेश पठाडे का विशेष सत्कार इस अवसर पर किया गया।

१२००० बालकों द्वारा प्रस्तुत संगीतमय योगासनः–

अब प्रतीक्षा थी १२००० बालक–बालिकाओं द्वारा संगीतमय योगासन के प्रस्तुति की। संगीत शुरू हुआ और १२००० बच्चे एक साथ – योग नृत्य– करने लगे। बाबा रामदेव इन बच्चों को अपलक देख रहे थे। पूज्य स्वामीजी जैसे ह्रदय से आशीर्वाद दे रहे थे। बच्चों का प्रदर्शन देखते–देखते पूज्य रामदेव बाबा अपने स्थान पर खड़े हो गये। योगासन करने वाले बच्चों को पूरे १५ मिनट तक निहारते रहे। आखिर ये बच्चे ही तो हैं; जो कल के नये भारत का निर्माण करने वाले हैं।

आशीर्वचनः–

इस अवसर पर अपने आशीर्वचन में **पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी** ने –योग संस्कार महोत्सव– को उस स्वप्न की पूर्ति बताया; जो उन्होंने और स्व. ओंकारनाथजी मालपाणी ने ३० वर्ष पूर्व संगमनेर में गीता

बाबा रामदेव ने मराठी में अपने आशीर्वचन की शुरुआत करके सभी को अचंभित कर दिया। उन्होंने बच्चों को राम–कृष्ण जैसी ऊर्जा और पार्वती, लक्ष्मी और दुर्गा जैसी शक्ति से भरा हुआ बताया। अपनी सामान्य पृष्ठभूमि के बारे में बताते हुये बाबा रामदेव ने बच्चों को कहा कि यदि आप भी मेरी तरह गरीब परिवार से हैं, तो आपको भी किसी प्रकार की चिंता नहीं करनी चाहिये; क्योंकि भगवान् ने आपको भी दो हाथ और दो पैर दिए हैं। मनुष्य को पुरुषार्थ करना चाहिये और अपने परिश्रम पर विश्वास रखना चाहिये। हमें अपनी भुजाओं पर भरोसा होना चाहिये, अपने ऊपर विश्वास होना चाहिये, परमात्मा पर श्रद्धा होनी चाहिये। और यही प्रेरणा रही है। ''सुबह–सुबह करो योग और दिन में करो कर्मयोग।'' पूज्य स्वामी जी ने ''थॉट, इमोशन, एक्शन और हेल्दी बॉडी, शार्प माइंड और कन्शनट्रेशन का मंत्र दिया।''

''यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।''

गीता के १८वें अध्याय के इस श्लोक का अर्थ बताते हुये पूज्य बाबा रामदेवजी ने कर्म की प्रधानता का महत्त्व बताया।

पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी से अपने परिचय और निकटता के विषय में बताते हुये बाबा रामदेवजी ने कहा कि जितना पुराना गीता परिवार का गौरवशाली अतीत है, करीब–करीब उतना ही पुराना (३० वर्षों का) आत्मीय संबंध मेरा पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज से है। जब आप और हम उनको पूज्य आचार्य किशोरजी व्यास के रूप में जानते थे। एक महात्मा का, एक विद्वान योगी–आचार्य का, एक संन्यासी का, एक तपस्वी का, एक आप्त पुरुष का महान् तपस्वी जीवन उसके अनेक आयाम और उसमें बाल संस्कार का ये पुनीत कार्य। पूज्य स्वामीजी का मैं वंदन करता हूँ, उसमे हमारे भाई संजय जी मालपाणी और राजेशजी मालपाणी के नेतृत्व में हजारों निष्कामभावी कार्यकर्त्ता जो पुरुषार्थ कर रहे हैं, उनका मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।

इतने में एक अद्भुत दृश्य के हम सभी साक्षी बन गये। पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज को अपने सहयात्री, अपने बड़े भाई और अपने अभिभावक बताते हुये बाबा रामदेव उनके चरणों में झुक गये और स्वामीजी महाराज ने उनको हृदय से लगा लिया। यह एक अद्भुत दृश्य था !! तेज ही तेज का वंदन कर रहा था, एक सूर्य दूसरे सूर्य का आलिंगन कर रहा था, उनके हृदय से जो प्रेम की धारा बह रही थी, वह देखनेवालों की आँखों से प्रेमाश्रु के रूप में प्रवाहित होने लगीं।

बाबा रामदेवजी ने केवल शब्दों में ही प्रेरणा नहीं दी; बल्कि उन्होंने स्वयं संगीत की धुन पर कठिन योगासनों की नृत्यमय प्रस्तुति देकर सभी को अचंभित कर दिया। किसी २० वर्ष के युवक के लिये भी जो कार्य चुनौती से भरा हो, ऐसी प्रबल ऊर्जा, लचीलापन और प्रयोग का प्रत्यक्ष उदाहरण पूज्य बाबा रामदेवजी ने यह कहते हुये दिया कि ''यह योगशक्ति और योगाभ्यास का परिणाम है और ९ वर्ष की आयु से लेकर अभी तक एक दिन भी ऐसा नहीं गया जब मैंने योगाभ्यास न किया हो – जो योगाग्नि में स्वयं को तपा लेता है उसे कोई रोग नहीं होता और योग से शक्ति जाग्रत होती है, तथा नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाती है।''

सम्मानः–

इस सकारात्मक और दिव्य ऊर्जा की अनुभूति मैं स्वयं प्राप्त कर रहा था। योगेश्वर महानाट्य के लेखन और निर्देशन के लिये आशीर्वाद देने के लिये मुझे और ध्रुव अकादमी के मेरे मित्र क्षितीश महापात्रा को पूज्य स्वामी जी ने मंच पर आने की आज्ञा दी। देश के दो महानतम संतों के दिव्य आभामंडल में खड़े रहना अपने–

शेष पृष्ठ ३५ पर.......

त्रिदशकपूर्ति पर सम्पन्न महानाट्य

योगेश्वर: गीता सार और योग का निरूपण

गीता जयंती का पावन दिवस और गीता-परिवार के त्रिदशकपूर्ति उत्सव का समापन समारोह! ऐसे अवसर पर एक ऐसा महानाट्य प्रभु-चरणों में समर्पित किया जाना चाहिये; जो भगवद्‌गीता की महिमा को प्रदर्शित करने वाला और उस दिव्य भगवद्-वाणी को दर्शकों के हृदय में स्थापित करने वाला हो! इसी विचार के साथ लगभग चार महीने पूर्व चिंतन शुरू हुआ। गीता का उपदेश प्रेषित करना मुख्य उद्देश्य था; किन्तु साथ-साथ २०००० दर्शकों को सवा दो घंटे तक इस प्रस्तुति से जोड़े रखना भी एक बड़ी चुनौती थी। गीता परिवार की बैठक में इस कार्य का दायित्व ध्रुव अकादमी को दिया गया और कार्य योजना पर चिंतन शुरू हुआ।

आज जब ''योगेश्वर''की सफल प्रस्तुति हो चुकी है, तो मुझे उन क्षणों की याद आ रही है; जब हम हर तीन-चार दिन से संजू भैया को एक नयी संकल्पना बताते थे और उसे अस्वीकार कर दिया जाता था। लगभग एक महीने तक यही चलता रहा। गीता, महाभारत और श्रीकृष्ण चरित्र का अध्ययन भी शुरू था। मैंने स्वामीजी से उनके महाभारत प्रवचन की पुस्तक जो अभी प्रकाशित होने वाली है, उसकी पीडीएफ कॉपी देने की विनती की। इसी पुस्तक की एक पंक्ति ने एक नयी दृष्टि दी, विचार करने का नया मार्ग दिखाया। पूज्य स्वामीजी ने पुस्तक में लिखा है कि गीता के पहले अध्याय में केवल अर्जुन ही कहता रहता है, वह पंडितों के समान बातें करता है। भगवान् तभी बोलते हैं; जब अर्जुन श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित भाव से शरणागत होता है। '**शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।**' इस एक बात ने हमारे विचार करने की दिशा ही बदल दी। अब तक जो स्वयं के कर्ता होने का भाव था; वह 'अहं' ही सबसे बड़ी बाधा थी। उस दिन आँख बंद करके स्वयं को श्रीकृष्ण के समर्पित कर दिया, मन ही मन पूज्य स्वामीजी का स्मरण किया और प्रार्थना की कि अब जो करना है वह आप ही बतायेंगे और हम वैसा ही करते जायेंगे। इस भाव के साथ जैसे ही कार्य करना शुरू किया तो एक तरफ गीता का उपदेश और उसके साथ-साथ श्रीकृष्ण के जीवन में गीता, इन दो बातों के बीच ताने-बाने को जोड़ते हुये महानाट्य के प्रस्तुतीकरण की संकल्पना सामने आई। अर्जुन बने बिना गीता साकार नहीं होती, इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव हमें प्राप्त हुआ। संजू भैया ने तुरंत हरी झंडी दिखा दी और यही नहीं, उन्होंने स्वयं भी उस पर चिंतन करना शुरू कर दिया।

संजू भैया तो हमेशा अपने साथ गीता की पुस्तक रखते हैं। गीता उनके जीवन में प्रत्यक्ष झलकती है और उसके साथ-साथ अभी उन्होंने सम्पूर्ण गीता कंठस्थ करने का निश्चय भी किया हुआ है। महानाट्य में कालिया मर्दन को गीता के इन्द्रिय-नियंत्रण के उपदेश के साथ जोड़कर जो प्रस्तुति दी गई वह उन्हीं की संकल्पना थी।

'धर्मश्री' पत्रिका के माध्यम से मैं यह बताना चाहता हूँ कि ''योगेश्वर'' का लेखन मैंने नहीं किया; अपितु पूज्य स्वामीजी ने ये कार्य मुझसे करवा लिया। इस महानाट्य का एक-एक शब्द पूज्य स्वामीजी को प्रत्यक्ष उपस्थित मानकर लिखा गया है। जब भी हम गलती कर जाते थे, तब ऐसी कोई बात, कोई पुस्तक अपने-आप सामने आ जाती, जो हमारी गलत धारणा को सुधार देती थी।

स्वामीजी की प्रसन्नता के लिये श्रीकृष्ण के पूजन-स्वरूप एक कृति का निर्माण करना है, इस भाव के साथ

कार्य किया गया। ध्रुव अकादमी के ३५० बाल–कलाकारों में पहले ही दिन इस भाव का निरूपण किया गया। उनसे कहा गया कि वे अभी अगले दो महीने तक हर रोज कम से कम ११ बार ''श्रीकृष्णः शरणं मम'' का जप करें। हमने तय किया कि इस महानाट्य के लिये हम किसी भी गीत की पाईरेटेड कॉपी का उपयोग नहीं करेंगे। इस गीत के लिये कम से कम हजार गीत सुने गये और लगभग २०० गीत सीधे उसको प्रकाशित करने वाली 'टाइम्स म्यूजिक', 'सारेगामा' और 'म्यूजिक टूडे' जैसे बड़े म्यूजिक समूह से संपर्क कर खरीदे गये। इन गीतों के गायक और संगीत निर्देशक को इस बात की सूचना देते हुये पत्र भी लिखा।

यह महानाट्य गीता परिवार के बाल संस्कार कार्य का ही एक हिस्सा था। संवाद रिकॉर्डिंग और नाटक के अभ्यास के दौरान पूरा वातावरण ही कृष्णमय हो गया था। बच्चे गीता और कृष्ण के जीवन से जुड़े सवाल करने लगे थे। एक बार एक बालक ने कहा कि यदि श्रीकृष्ण ने गीता नहीं कही होती; तो इतने लोग युद्ध में नहीं मारे जाते। फिर गीता अच्छी है या बुरी? इसी प्रश्न का उत्तर देते हुये ''योगेश्वर'' के प्रथम दृश्य युद्ध और उसके पश्चात् गाँधारी के विलाप की संकल्पना सामने आई। उस बालक ने प्रश्न का जो उत्तर दिया – वही इस महानाट्य में महर्षि वेदव्यास के वे संवाद बने, जो वे गाँधारी को श्राप के पश्चात, कहते हैं।

रास के नृत्य के लिये हमने ९वीं कक्षा की एक बालिका को राधा बनाया और कृष्ण बनाया ५वीं के छात्र को। प्रचलित भ्रान्ति से ये बात एकदम उलट थी, जहाँ राधा–कृष्ण को समवयस्क 'प्रेमी–प्रेमिका' के समान दिखाया जाता है। इस बात के लिये भी बच्चों और शिक्षकों से चर्चा का अवसर मिला। कर्ण के असली चरित्र को जिस प्रकार उजागर किया गया, उस बात से भी कर्ण के बहुत से 'फैंस' उलझन में पड़ गये। इनमें ऐसे शिक्षक अधिक थे; जिन्होंने 'मृत्युंजय' पढ़ी थी। अपने 'दर्द' को लेकर वे कभी रात को हमारे ऑफिस में आ जाते, उनसे तो घंटों चर्चा चलती थी। घर में टीवी भी बंद हो गया था और मैं जब घर जाता तो गीता और कृष्ण की ही चर्चा करता था। सोते–जागते, खाते–पीते, यात्रा करते हुये, हर समय केवल और केवल गीता, महाभारत और श्रीकृष्ण...। जिस प्रकार स्वामीजी संस्कार कार्य के कार्यकर्ताओं की तुलना इत्र बेचने वाले दुकानदार से करते हुये कहते हैं कि इत्र बिके या न बिके, लेकिन उस दुकानदार का जीवन तो सुगन्धित रहता ही है, उसी प्रकार महानाट्य की प्रस्तुति यदि इतनी सराहनीय नहीं भी हुई होती तो भी इस महानाट्य से जुड़े कलाकारों और कार्यकर्ताओं का जीवन तो गीता–ज्ञान की गंगा में भीग कर और श्रीकृष्ण की कथा में डूब कर सफल हो ही चुका था। योगेश्वर की इस कृति ने मुझे जीवन जीने के नये सूत्र दिये, किसी भी बात को या परिस्थिति को समझने की एक नई दृष्टि दी। निष्काम कर्मयोग का अर्थ समझाया और स्थित–प्रज्ञ योगी जैसा बनने का चुनौती भरा आदर्श दिया।

महानाट्य के सात दिन पहले संजू भैया का फोन आया और उन्होंने कहा कि बाबा रामदेव अब महानाट्य के लिये रात को रुकेंगे नहीं। वास्तव में बाबा रामदेव की उपस्थिति से सभी में एक विशेष उत्साह था; लेकिन इस खबर ने मुझे जरा भी विचलित नहीं किया और न ही उत्साह कम हुआ। यदि विचलित हो जाता और उत्साह कम हो जाता तो 'योगेश्वर' उसी दिन असफल हो जाता; क्योंकि योगेश्वर श्रीकृष्ण तो निष्काम कर्मयोग का ही संदेश देते हैं। हमारे लिये तो पूज्य स्वामी जी की पावन उपस्थिति ही सबसे बड़ी बात थी। 'योगेश्वर' महानाट्य उनको और श्रीकृष्ण को ही समर्पित था।

'योगेश्वर' महानाट्य की प्रस्तुति के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने गीता के १८वें अध्याय के इस श्लोक ''तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः। विस्मयो मे महान् राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः।।'' के साथ अपना आशीर्वाद दिया – ''संजय कहते हैं कि भगवान् के दिव्य रूप का दर्शन करने के उपरांत मैं पुनःपुनः रोमांचित हो रहा हूँ। इस महानाट्य को देखने के पश्चात मेरी भी अवस्था

शेष पृष्ठ २९ पर.....

गुरुदेव का ६७ वाँ जन्मोत्सव!

हम औरंगाबाद वासियों के लिए २५ जनवरी का दिन परम सौभाग्य का दिन था। नहीं नहीं गुरुदेव के शिष्यों के लिए तो आज का दिन एक मांगलिक त्यौहार ही था क्योंकि आज हमारे परम श्रद्धेय गुरुदेव स्वामी गोविंददेवगिरिजी महाराज का ६७ वाँ जन्मदिन था, वैसे तो गत ५ दिनों से श्री. सत्यनारायणजी जाजू एवं महाभारत कथा सेवा समिति, औरंगाबाद द्वारा आयोजित महाभारत कथा के श्रवण का परम लाभ प्राप्त हो रहा था परंतु इन पावन दिनों के अंतर्गत षट्तिला एकादशी (तिथी के अनुसार जन्मदिन) एवं २५ जनवरी का आगमन सोने में सुहागा था। आज प्रात:काल से ही हम सभी अत्यंत प्रसन्न थे। पूज्य गुरुदेव के द्वारा अपने दैनिक पूजापाठ के अनंतर देवदर्शन, गौदान, संत आश्रम दर्शन, संत सम्मान आदि मांगलिक कार्य किये जा रहे थे। परम संत पूज्यवर को यह सब करने की कोई आवश्यकता नहीं थी किंतु लोकसंग्रह की दृष्टि से यह अत्यंत आवश्यक था क्योंकि श्रेष्ठ महापुरुष जिसप्रकार के आचरण करते हैं वैसे ही आचरण छोटे लोग करते हैं और अबतक का अनुभव यह रहा है कि पूज्य गुरुदेव के हर छोटे बडे कार्यों से हम सभी को कुछ ना कुछ उपदेश मिलता रहा है। आज प्रात: ९.३० बजे पूज्यवर के जन्मोत्सव के निमित्त ज्योति नगर प्रभाग के अथक प्रयास से आपकी पावन उपस्थिति में रक्तदान शिविर का उद्घाटन हुआ। इस शिविर में ३७१ लोगों ने रक्तदान देकर अनेक लोगों को अकाल मृत्यु से बचाया तथा उन्हें दीर्घायु होने का वरदान दिया क्योंकि आज हमारे देश में अनेक लोग अचानक अपघात अथवा किसी अन्य रोग के कारण रक्त के अभाव में अपनी जीवन ज्योति को बूझा बैठते हैं उन्हें अकाल मृत्यु का ग्रास बनना पडता है। इसलिए आज रक्तदान को जीवनदान मानने में कोई अपवाद नहीं। जिन जिन महानुभावों ने इस शिविर में रक्तदान किया उन सबका बहुत बहुत अभिनंदन एवं पूज्यवर का शुभ आशीर्वाद!

रक्तदान शिविर के पश्चात् जन्मोत्सव के सौभाग्यशाली यजमान श्री. श्रीकांतजी मणियार एवं सौभाग्यवती रूपालीजी मणियार के निवास स्थान पर यजमान परिवार द्वारा पूज्यवर की पुष्पार्चना की गई। संतपूजन, औक्षण

तथा ६७ मंगल दीपों के द्वारा पूज्यवर के तेजस्वी स्वरूप की आरती कर प्रभुचरणों में गुरुदेव के निरामय जीवन एवं दीर्घायु होने की कामना की गई। तदनंतर वेदमंत्रों के उद्घोष के साथ सप्तधान्योंसे पूज्यवर का तुलादान संपन्न हुआ। इसके पश्चात् पूज्यवर ने गौपूजन एवं गौदान का परम लाभ प्राप्त किया। उपस्थित सभी भक्त पूज्यवर को प्रणामकर प्रसाद लेकर विदा हुए।

सायंकाल में कथा के उपरांत लगभग ७ हजार श्रोताओं, महाराष्ट्र के सैकडों शिष्यों एवं महान संतों की पावन उपस्थिति में पूज्यवर के मंगल जन्मोत्सव का आरंभ हुआ। सर्वप्रथम महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की पूर्व न्यासी सौभाग्यवती पद्मा तापडियाजी के द्वारा पूज्य गुरुदेव को राजस्थानी पगड़ी एवं पुष्पमाला पहनाकर दिव्य स्वागत किया गया। तदनंतर शोभाजी मालाणी ने स्वरचित गुरुवंदना का सस्वर गायन किया। तत्पश्चात् यजमान परिवार द्वारा पूज्यवर का पूजन एवं कनकाभिषेक किया गया एवं स्वर्ण मुकुट पहनाकर ७० किलो लड्डुओं से तुलादान संपन्न हुआ। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत वेदमूर्ति श्री श्यामसुंदर शास्त्रीजी को प्रतिवर्ष दिए जानेवाला महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का '**महर्षि वेदव्यास पुरस्कार**' पूज्यवर द्वारा प्रदान किया गया। यहाँ विशेष उल्लेखनीय बात ये है कि महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का २५ वाँ पुरस्कार दिया गया था। डॉ. श्री. शांतीलालजी साबू एवं वेदमूर्ति श्री. रेणुकादासजी पाठक को भी संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल का '**धर्म सेवा प्रसाद पुरस्कार**' प्रदान किया गया। तथा पं. श्री विजयजी पलोड द्वारा संचालित गोविंद गौशाला की गौसेवा दिनदर्शिका का विमोचन भी किया गया।

पूज्य गुरुदेव के जन्म से लेकर ६७ वर्ष के मंगल प्रवास को प्रदर्शित करनेवाला एक स्लाइड शो तैयार किया गया जिसमें महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, गीता परिवार एवं श्रीकृष्ण सेवा निधि आदि न्यासों के कार्यकलापों का भी दर्शन करावाया गया। पूज्यवर की प्रदीर्घ दृष्टिमें विभिन्न न्यासों के माध्यम से चल रहे देशव्यापी सेवाओं को स्लाइड के माध्यम से देखकर सबका हृदय गदगद हो रहा था एवं पूज्यवर के बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के चित्र देखकर सभी अत्यंत प्रसन्न हो रहे थे। पूज्यवर के जन्मोत्सव के निमित्त गीता परिवार औरंगाबाद द्वारा गीता परिवार की पंचसूत्री को केंद्र में रखकर स्वामी विवेकानंदजी के जीवन पर आधारित लघु नाटिकाएं बनाई गई जिसका प्रदर्शन आज पूज्य संतों की सन्निधि में किया गया।

इन सभी कार्यक्रमों में संत श्री भास्करगिरिजी महाराज, संत श्री मुकुंदकाका जाटदेवलेकर, सिख धर्मगुरु ज्ञानीखड्गसिंहजी तथा बौद्ध धर्मगुरु श्रीभन्ते विष्णुबोध महाथैरो आदि महान संतों की पावन उपस्थिति रही।

Slide Show का विवरण एवं कार्यक्रम की प्रस्तुती जान्हवी केळकर द्वारा की गयी, नाटिकाओंका लेखन व निर्देशन शोभा मालानी एवं जान्हवी केळकर द्वारा किया गया, इसमें सौ. मंगल राठी जी का विशेष योगदान मिला। सौ. पद्माजी तापडिया का प्रोत्साहन सराहनीय था, साथ ही अन्य समस्त सहयोगीयों में श्री व सौ. मुकुंद गट्टानी, मधुरीका, ऋतुजा, क्रांती डागा, अमृता चाण्डक, रेखा राठी, सुधा मुंदडा, शिल्पा सारडा, ज्योती सोनी, गीता खटोड एवं अनेक कार्यकर्ताओंके उल्लेखनीय सहयोग से स्वामीजी के जन्मोत्सव पर इन सभी कार्यों में गीता परिवार के परम आदर्श स्वामी विवेकानंदजी के दिव्य जीवन की छोटी सी झलक कथाश्रोताओं के सम्मुख रखने का प्रयास स्वामीजी के आशीर्वाद से संपन्न हुआ।

इस प्रकार औरंगाबाद वासियों को महाभारत कथा के दौरान पूज्यश्री का ६७ वाँ जन्मोत्सव मनाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

– पं. विजयकुमार पल्लोड
श्रीमती जान्हवी केळकर
(औरंगाबाद)

हार्दिक अभिनंदन!

पूरे देश को अपने 'परम' संगणक से गौरवान्वित करनेवाले सुविख्यात संगणकशास्त्रज्ञ एवं महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के पूर्वन्यासी डॉ. विजयजी भटकर की नियुक्ति कुछ ही दिन पूर्व नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में हुई है। हम 'धर्मश्री' परिवार की ओर से आपका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

गीता परिवार त्रिदशकपूर्ति निमित्त आयोजित

राष्ट्रीय योग संस्कार महोत्सव : कतिपय स्मृतियाँ

गीता परिवार के त्रिदशक पूर्ति के अवसर पर संगमनेर में आयोजित होने वाले समारोह में लखनऊ के बालकों के लिए गीता परिवार द्वारा निर्मित योग–सोपान का संगीतमय प्रदर्शन करने का निश्चय हुआ। गीता परिवार लखनऊ से १०० बालकों के जाने का निर्धारण किया गया। फिर सभी ने इसकी तैयारी आरम्भ की और पहले से निर्धारित गीता परिवार के कार्यालय में गीताजी का अनुपठन करते रहे। योग सोपान कार्यक्रम हेतु वरिष्ठ प्रशिक्षक के दिशा निर्देशन में सभी नित्य योग का भी अभ्यास करते रहे।

संगमनेर जाने हेतु लगभग १०० लोगों के आवेदन प्राप्त हुए जिनमें योगासन में प्रवीण व भगवद्गीता का कमसे कम १ अध्याय कंठस्थ ऐसे १०० बालकों का चयन किया गया। सभी चयनित बालकों, कार्यकर्ताओं हेतु यात्रा से कुछ दिन पूर्व ४ दिसम्बर २०१६ को एक सामूहिक प्रशिक्षण व परीक्षा सत्र का आयोजन किया गया। सभी को उनके यात्रा हेतु सीट संख्या की सूची दी गई। लखनऊ से जाने वाले सभी केन्द्रों के प्रतिभागियों को भगवद्गीता के १८ अध्याय के अनुसार १८ गुटों में बाँटा गया व उन्हें १८ अध्यायों के नाम दिए गए। सभी गुटों में एक कार्यकर्ता को गणनायक व सहगणनायक बनाया गया। योग सोपान हेतु चल रहे प्रशिक्षण का अवलोकन प्रशिक्षिकों द्वारा किया गया। लखनऊ गीता परिवार ने शोभा यात्रा की तैयारी भी १५ दिन पहले ही शुरू कर दी थी। शोभा यात्रा में भगवद्गीता के १६वें अध्याय में वर्णित २६ दैवीय गुणों को आधार चुना गया। उन गुणों के आदर्श महापुरुषों का चयन अनेक सामूहिक चर्चाओं में किया गया। २६ बालकों को उन महापुरुषों का वेश धारण करने हेतु चुना गया; प्रत्येक महापुरुष के आगे चलने हेतु भी एक एक बालक का चयन किया गया जिसे एक विशेष हस्ततख्ती जिस पर एक दैवीय गुण तथा उस गुण के आदर्श महापुरुष का नाम लिखा था। **अभय**–वीर सावरकर, सत्त्वसंशुद्धि–तुलाधार वैश्य, **ज्ञानयोग** में **दृढ़स्थिति**–विदेह जनक, **दान**–दानवीर कर्ण, **दम**–भक्त मीराबाई, **यज्ञ**–ऋषि भारद्वाज, **स्वाध्याय**–चैतन्य महाप्रभु, **तप**–भक्तराज ध्रुव, **आर्जवम्**– लाल बहादुर शास्त्री, **अहिंसा**–महात्मा गाँधी, **सत्य**–राजा हरिश्चन्द्र, **अक्रोध**–संत एकनाथ, **त्याग**–भरत जी, **शान्ति**–गौतम बुद्ध, **अपैशुनम**–संत तुकाराम, **दया**– राजा शिबि, **अलोलुपता**–नचिकेता, **मार्दव**–राधा जी, **ह्री:**–सती अनसूइया, **अचापलम्**–संत रविदास, **तेज**–रानी लक्ष्मीबाई, **क्षमा**–दयानन्द सरस्वती, **धृति**– महावीर स्वामी, **शौच**–पं. मदन मोहन मालवीय, **अद्रोह**–भक्त प्रह्लाद, नातिमानिता–गोस्वामी तुलसीदास।

लखनऊ गीता परिवार ने शोभा यात्रा की तैयारी भी १५ दिन पहले ही शुरू कर दी थी। शोभा यात्रा में भगवद्गीता के १६वें अध्याय में वर्णित २६ दैवीय गुणों को आधार चुना गया। उन गुणों के आदर्श महापुरुषों का चयन अनेक सामूहिक चर्चाओं में किया गया। २६ बालकों को उन महापुरुषों का वेश धारण करने हेतु चुना गया;

सभी बालकों को ६–७ के वर्ग में बाँटा गया व उनके गुट का एक जैसा प्रवेश पत्र दिया गया; जिसमें उस गुट का नाम गुट प्रमुख का नाम, सभी के मोबाईल न. तथा एक दैवीय गुण लिखा था। जिस गुट को जो भी प्रमुख गुण मिला था, उसे अपनी पूरी टीम के साथ मिलकर उस गुण का आदर्श बनाना था। उस प्रवेश पत्र (टिकट) में प्रस्थान तथा ट्रेन का सीट नंबर निश्चित कर दिया गया था। उस एक टीम में जितने भी लोग थे उन सभी के टिकेट में उनके दो–दो मोबाइल नंबर लिखे गए। सभी को ८ दिसम्बर की रात्रि ९.३० बजे लखनऊ जंक्शन के चारबाग़ स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर ४ पर पहुचने की सूचना के साथ वर्ग का समापन किया गया।

यात्रा के लिए प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्था की तैयारी की गई जिसमे दर्द, बुखार, हलकी चोट के लिए उपयोगी औषधि साथ में रखी गई; रेलवे स्टेशन एवं यात्रा के दौरान रेल के डिब्बों में बच्चो की सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गई और इसके लिए उपयुक्त कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी दी गई। यात्रा के दौरान भोजन व्यवस्था

नि:संग होने के लिये सत्संग अनिवार्य है। – पूज्यपाद

बहुत ही सुनियोजित ढ़ंग से की गई; जिसमे निर्धारित स्टेशन पर हमें अत्यन्त स्वादिष्ट एवं गरमा गरम सात्विक भोजन प्राप्त हुआ। भोजन अधिक आ जाने की स्थिति में कुछ कार्यकर्ताओं ने इसे दूसरे डिब्बों में गीता–परिवार के प्रसाद के रूप में वितरण भी किया। बच्चों की गणना व उपस्थिति हर कुछ घंटे बाद की गयी जिसके लिये एक सुनियोजित छायाप्रति रखी गई; जिसमें प्रत्येक बच्चे का गुट संख्या, गुट नाम, गुट प्रमुख का नाम तथा बच्चों का अनुक्रमांक एवं उनकी आरक्षित शयिका क्रम संख्या स्पष्ट रूप से लिखी थी।

प्रात: नासिक पहुँचकर हम सब ने एक ग्रुप फोटो ली फिर सभी बालकों की गणना की गई और ध्रुव अकेडमी की बसों द्वारा मालपाणी हेल्थ क्लब गए जहाँ पर बच्चों को १५ मिनट में नहाकर अपनी निर्धारित पोशाक पहनकर नाश्ता करके दूसरी बसों द्वारा शोभायात्रा में सम्मिलित होना था और ये सभी कार्य समय से हुए। चूँकि हमारी ट्रेन बहुत लेट थी, सो हमारा रात्रि का प्रोग्राम नहीं हो पाया और फिर भी इस बात का संतोष रहा कि गुरूजी के आशीर्वाद से हम लोग समय पर शोभा यात्रा में सम्मिलित हो सके। अत्यन्त उत्साहजनक शोभायात्रा में २६ दैवीय गुणों की झाँकी शोभायात्रा की शोभा बढ़ाती प्रतीत हुई। लखनऊ से ही लाये हुए २ ट्राली माईक सेट पर सभी ने भगवद्गीता के १२वें अध्याय, अनेक गीतों व घोषणाओं का उदघोष किया।

शोभायात्रा के पश्चात् हम सभी मालपाणी रिसोर्ट पर गये जहाँ हमारे भोजन की व्यवस्था थी। भोजन के पश्चात् सभी लोग एक बार फिर से बसों द्वारा जाणता राजा मैदान में एकत्रित हुए, जहाँ पर १३००० बालकों का स्वामी गोविंददेवजी महाराज व स्वामी रामदेवजी महाराज के समक्ष संगीतमय योग–सोपान का प्रदर्शन प्रतीक्षारत था। स्वामी रामदेवजी विशेष विमान द्वारा हरिद्वार से नासिक, फिर हेलीकाप्टर से नासिक से संगमनेर पहुंचे। कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बाद योग–सोपान का संगीतमय प्रदर्शन हुआ और हमें स्वामी गोविंददेवजी महाराज व स्वामी रामदेवजी महाराज का आशीर्वचन प्राप्त हुए। स्वामी रामदेवजी महाराज बालकों की इतनी बड़ी संख्या व उनके सधे योगाभ्यास से अत्यन्त प्रसन्न व गदगद् हुए। बालकों को प्रसन्न करने के लिये उन्होने मंचपर योगनृत्य भी करके दिखाया

तत्पश्चात् हम सब फिर से मालपानी रिसोर्ट गए जहाँ हमारे सायं के भोजन की सुंदर व्यवस्था थी। भोजन के पश्चात हम सब पुन: जाणता राजा मैदान में एकत्रित हुए जहाँ पर योगेश्वर महानाट्य का प्रदर्शन हुआ जो कि ध्रुव अॅकेडमी के ३५० बालकों एवं शिक्षकों द्वारा बहुत ही आधुनिक उपकरणों के साथ प्रस्तुत किया गया, जिसकी प्रशंसा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाभारत धारावाहिक में युधिष्ठिर का अभिनय करने वाले श्रीमान गजेन्द्र चौहान ने स्वयं की। देर रात्रि हम सब पुन: मालपाणी हेल्थ क्लब पहुँचे, जहाँ हमारे लिए गरम दूध और बिस्कुट की व्यवस्था थी, और फिर हम सब अपने निर्धारित कक्ष में शयन के लिए चले गए। दूसरे दिन प्रात: दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर हम लोगों ने मालपाणी हेल्थ क्लब में और फोटोग्राफी की, नाश्ता किया। गीता परिवार के कार्याध्यक्ष आदरणीय संजय भैया ने लखनऊ में भगवद्गीता श्लोकांक से कंठस्थ कर रही तीन बालिकाओं रूपल, कविता व अंजली की परीक्षा की जिसका वीडियों शूट भी किया गया। तीनों बालिकाओं की अद्भुत स्मरणशक्ति को देखकर आदरणीय संजय भैया चकित हो गये। उन्होंने तीनो की भूरि–भूरि प्रशंसा की व उन्हें आशीर्वाद दिये। संजय भैया ने लखनऊ टीम के साथ एक ग्रुप फोटो ली और रास्ते के लिए भोजन एवं जल के पॉकेट के साथ हम सबको विदा किया। १२ दिस. रात्रि ८ बजे हम सब लखनऊ पहुँचे। इस प्रकार प.पू. स्वामी जी की कृपा से ११० लोगों के मन में एक अविस्मरणीय यात्रा और कभी न भूल सकने जैसे अनेकों पल व दृश्य सदा के लिये अंकित हो गये।

– अनुराग पाण्डेय
सम्पर्क प्रमुख, गीता परिवार, लखनऊ

हार्दिक अभिनंदन!

संस्कृत भाषा के राष्ट्रीय स्तर के विद्वान् प्रेमी एवं संस्कृत के प्रचार को पूर्णतया समर्पित एवं महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के पूर्वन्यासी श्री. चमू कृष्णशास्त्रीजी को गत मास ही 'पद्मश्री' उपाधि से सम्मानित किया गया। हम 'धर्मश्री' परिवार की ओर से आपका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

विकारों से भरा मन भगवान तक नहीं पहुँचता। – पूज्यपाद

योग संस्कार महोत्सव सदैव स्मरणीय रहेगा !

१० दिसम्बर, २०१६ को परम् पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से गीता जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय योग महोत्सव, संगमनेर में पहुँचने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संगमनेर की धरती पर पहुँचते ही तन-मन में नई उर्जा बहने लगी एवं गुरुदेव के सानिध्य में ऐसा अद्भुत कार्यक्रम देखने को मिला, जिसकी हम जीवन में कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

सभी कार्यकर्ताओं से मिलकर पुरानी यादें ताजा हो गई। संस्कारों की गंगा जो कोटा सहित आठ प्रदेशों में पहुँची, आज उन सभी का संगम उद्गम स्थल पर अद्भुत दृश्य ''न भूतो न भविष्यति''। संजय भैया और प्यारी अनुराधा के नेतृत्व में, दत्ता भैया, गिरीश भैया एवं सभी कार्यकर्ताओं के कार्य सम्पादन का अद्भुत प्रदर्शन हर क्षेत्र में देखने को मिला। हृदय के भावों को शब्दों में बाँधना कठिन है।

मैनें अपने जीवन में ऐसे महोत्सव कम ही देखे हैं जिसमें अनुशासित गीता परिवार, पूज्य गुरुदेव के प्रति निष्ठावान कार्यकर्ता, सब अपनी-अपनी जिम्मेदारियों के प्रति उत्साहित, अद्वितीय था। गीता परिवार की सभी शाखाओं का उत्साहपूर्ण प्रस्तुतिकरण-शोभायात्रा का दृश्य- बच्चों की ड्रम पर प्रस्तुति तो गजब ही थी। इतने बड़े ड्रम रस्सी से बंधे पूरी शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। आखिर तक भी उनके चेहरे पर थकावट का नामोनिशान नहीं था अपितु अपूर्व जोश व उत्साह झलक रहा था। पर्यावरण का संदेश देते बालक अपनी मनोहारी वेषभूषा में बहुत ही प्यारे लग रहे थे। संगीत पर बच्चों द्वारा प्रस्तुत योग मन को लुभा रहा था। मन मोहने वाली झाकियाँ, विराट रूप श्रीकृष्ण के साथ में नन्हें बाल-गोपाल, श्री गोवर्धन पर्वत की झाँकी, २६ देवी सम्पदा की प्रस्तुति, पूरी शोभायात्रा में अति सुन्दर रंगोली द्वारा सभी का स्वागत्, पूरे मार्ग में फूलों की वर्षा मानों देवी-देवताओं का आशीर्वाद मिल रहा हो। स्वागत् एवं सुन्दर ओड़िशी नृत्य, जिसमें बच्चों का सुन्दर ड्रैस में बेहतरीन कोर्डिनशन में-अनुराधा जी एवं उनकी टीम की लगन और मेहनत पूर्णरुप से दिख रही थी। झांसी की रानी के रूप में भुवनेश्वरी का शौर्य प्रदर्शन सभी को प्रेरणा प्रदान कर रहा था। आवास एवं भोजन व्यवस्था में अनुशासन लाजवाब था। कार्यकत्ताओं में सेवा, समर्पण, अनुशासन व त्याग पग-पग पर दिख रहा था।

मुख्य कार्यक्रम में तिरंगे का दृश्य, पूज्य दोनों सन्तों के उत्साहपूर्ण, आन्तरिक खुशी से ओत-प्रोत चेहरें, मानों उनका कोई सपना साकार रुप ले रहा हो। उन्हें कोटि-कोटि नमन! पूज्य गुरुदेव के साथ में योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज जिस महोत्सव की शोभा बढ़ा रहे हों। उसका क्या कहना।

आ. संजय भैया की दृढ़ संकल्प शक्ति, प्रबल नेतृत्व क्षमता, उच्चविचार एव पूज्य गुरु चरणों में अटूट विश्वास ने ही इस महान कार्य को अपने लक्ष्य तक पहुँचाया।

हमें गर्व है अपने गुरुदेव पर जिनकी उपस्थिति एवं मार्ग-दर्शन शिष्यों में इतनी उर्जा भर देते हैं कि कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। महोत्सव की सफलता पूज्यवर की कृपा का ही फल है।

श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता, पानीपत।

(योगेश्वर महानाट्य) पृष्ठ २४ का शेष ....

कुछ इसी प्रकार की हो गई है। ध्रुव अकादमी के ये छोटे-छोटे बालक-बालिकायें और ऐसे समर्पित शिक्षक-शिक्षिकायें जिनमें से कोई प्रोफेशनल नहीं हैं, उन्होंने आज यहाँ ऐसी प्रस्तुति दी है; जो अच्छे से अच्छे महानाट्य से टक्कर ले सकती है। इतना सुन्दर यह जो प्रदर्शन यहाँ करके दिखाया गया है; वह उस महान आविष्कार की एक आवृत्ति है जो गीता परिवार पूरे देश भर में कर रहा है। **गीता जयंती के दिन इस महानाट्य ने हमारे मन में भी उस अपूर्व भगवद्गीता को एक बार फिर से जागरण कर दिया है। अब हमें धनुर्धर पार्थ की तरह इस प्रकार का पौरुष दिखाना चाहिये कि भगवद्-भक्ति के साथ हम सब मिलकर पुनः अपनी भारत माता को गौरवशाली बना दें।''**

पूज्य स्वामीजी के उपरोक्त आशीर्वचन और ऊर्जावान प्रेरणादायी वाणी ने सभी को कृतार्थ कर दिया। पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा से निर्मित श्रीकृष्ण की कृति, श्रीकृष्ण के चरणों में ही अर्पित की गई और पूज्य स्वामीजी के माध्यम से ही योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता परिवार के कार्यकर्ताओं का समर्पण और ध्रुव के विद्यार्थियों का ये पूजन स्वीकार किया।

श्री गिरीश डागा, संगमनेर

(जपयज्ञ) पृष्ठ ८ का शेष ....

होगा कि जितना–जितना नाम स्मरण अधिकाधिक करते रहेंगे, अपनी रसना के याने जिह्वा के साथ रस लेते हुए भजन करेंगे। ध्यान रखना, भजन शब्द का एक अर्थ है– 'भजनम् नाम रसनम्'। जब तक इस रस की जागृति नहीं, प्रेम की जागृति नहीं, तब तक भक्ति, भक्ति है ही नहीं। इसलिये जप भाव के साथ करें।

जप में निर्धारित समय एवं स्थान का विशेष महत्त्व है :–

जब प्रेमयुक्त नाम–स्मरण, मैंने कुछ समय के लिये किया; तो हो सकता है आज पूरा मन न लगे, कल थोड़ा अधिक मन लग जाये। जितना आज विक्षेप हुआ, उतना विक्षेप कल न हों। ऐसा करते–करते आसन पर बैठना। मैं जब रोज आरम्भ करूँगा, तो बहुत अच्छा होगा यदि मैं आसन पर उसी नियत समय पर बैठूँ। अपने जप का स्थान और समय यदि बदलता नहीं है; तो आप एक बात देखेंगे कि जब वह समय आयेगा अपने आप आपकी वृत्तियाँ उधर चली जायेंगी। कोई भी एक स्थान और समय निश्चित कर लीजियेगा। मुझे प्रातःकाल आठ बजे मेरे आसन पर बैठना है और आठ से नौ बजे तक आसन से उठना नहीं है। इतना केवल एक शारीरिक नियम भी हम लोग अपना लेते हैं तो अपने आप कुछ दिनों के पश्चात् चित्तवृत्तियाँ आठ बजे भगवत् स्मरण की ओर उन्मुख हो जाती हैं। शास्त्रकारों ने कहा नाम का जप और उसके साथ रस का प्रादुर्भाव करने के लिये सर्वोत्तम समय संधिकाल है। सूर्य का उदय हुआ नहीं और रात चली गई। यह संधिकाल है। इसमें आधा घंटा–एक घंटा निकाल कर के हम बैठ जायें। स्नान भी कर ही लिया जाये; लेकिन नहीं हुआ तो भी हम समय को टालें नहीं। जप करने के लिये बैठ जायें।

मुझे प्रातःकाल आठ बजे मेरे आसन पर बैठना है और आठ से नौ बजे तक आसन से उठना नहीं है। इतना केवल एक शारीरिक नियम भी हम लोग अपना लेते हैं तो अपने आप कुछ दिनों के पश्चात् चित्तवृत्तियाँ आठ बजे भगवत् स्मरण की ओर उन्मुख हो जाती हैं।

नाम – योग

यदि इस प्रकार का थोड़ा–सा अभ्यास हम भगवन् नाम का वैखरी से ही उच्चारण करें, उसके पश्चात् उसका अंतर्मन से उच्चारण और उसके साथ प्रेम की वृत्ति को जोड़ कर सीधे बैठकर हम करते रहें और भगवत् विग्रह सामने रहें। नेत्र खुलते ही हमारा ध्यान भगवान् के श्रीविग्रह की ओर जाये। किसी प्रकार की कोई आवाज मेरे कानों में न आये और मैं अपने को उस समय अन्य किसी भी काम में व्यस्त न करूँ। ऐसी साधना करते–करते चित्त अत्यन्त अंतर्मुख होकर शब्द का ही उपयोग करते हुए मैं शब्दों से विरत हो सकता हूँ। यदि अनेक शब्दों को विलीन करना है, चित्त से निकालना है तो एक शब्द का मैं प्रयोग करूँ तो अन्ततोगत्वा वह शब्द भी उस भाव में विलीन हो जाता है। वह शब्द उस भाव में लीन हो जाने पर '**पश्यन्ति**' में प्रवेश होकर एक अंतर्यात्रा आरम्भ हो जाती है। प्रतीकस्वरूप मन और अन्ततोगत्वा नादस्वरूप मन। इस प्रकार से एक अंतर्यात्रा होती है और तब हम एक प्रगाढ़ मौन में स्थिर हो जाते हैं तथा उसके पश्चात् पुनश्च नाम का उच्चारण वहाँ से आरम्भ होता है। वैखरी से मध्यमा, मध्यमा से पश्यन्ति, पश्यन्ति से परा में आकर के जब वह नाम पुनश्च उलटे क्रम से प्रगट होता है तब वह इतना प्रभावोत्पादक हो जाता है कि उस का प्रभाव किसी के भी ऊपर हो जाता है। हमारे समस्त सिद्धों ने क्या किया? वे नामस्मरण की प्रक्रिया के माध्यम से उस **परा** अवस्था पर्यन्त पहुँचे और उसके पश्चात् फिर से उस **परा** वाणी से उदित हुआ नाम जब **वैखरी** में आया, तब वह नाम सामान्य नहीं रहा। वो प्रवेश करते समय सामान्य था; लेकिन जब वह पुनः बाहर

आया, तो असामान्य हो गया।

इसी परिप्रेक्ष्य में आप देखेंगे कि बाल भक्त ध्रुव जप करते–करते उस अवस्था पर्यन्त पहुँच गया कि वाणी जागृत ही नहीं रही, अन्तर्लीन हो गई, प्रसुप्त हो गई और तत्पश्चात् उसकी वाणी का जागरण भगवान् ने किया। जब भगवान् द्वारा वाणी का जागरण हुआ, तो वह वाणी अनोखी थी, अलौकिक थी, सामान्य नहीं थी। यह एक इसी देह में रहते हुए होने वाला पुनर्जन्म है। ईसा ने भी कहा (Ye must be born again) इस प्रकार का पुनर्जन्म जिसके भीतर हो गया, वही वास्तव में सिद्ध हुआ। इसी देह में रहते हुए एक पुनर्जन्म! इसके लिये एक आन्तरिक रूपान्तरण की आवश्यकता है; जिसे कृष्णमूर्ति 'म्यूटेशन' कहते हैं। एक इनर चेन्ज, टोटल चेन्ज। हमारे सन्तों ने इसबात का समर्थन किया है– 'मीच मज व्यालो पोटा आपुलिया आलो'। सन्त तुकाराम महाराज कहते हैं 'अरे! मेरा पुनर्जन्म हो गया। मेरा नया जन्म हो गया।' अब मैं वह नहीं हूँ। ''आई हैव अन्डरगॉन ए टोटल चेन्ज'' और उसके पश्चात् का पूरा जीवन ही दिव्य जीवन होता है। उसका आरम्भ यज्ञ प्रक्रिया से करके कैसे हमारी देह को, प्राणों को, मन को पवित्र किया जाये यह भी महत्त्वपूर्ण है–

'महायज्ञैश्च यज्ञैश्च क्रियते ब्राह्मीयं तनुः'

शरीर को भी साधा जाये, प्राणों को भी स्थिर किया जाये, बुद्धि को भी साधा जाये, अहं को विगलित किया जाये। इन सब प्रक्रियाओं में जपयज्ञ का उपयोग किया जाये। यह पूरे जीवन को दिव्य बनाने की एक विलक्षण किंतु सरल प्रक्रिया है। इसलिये हम किसी भी प्रकार के यज्ञ का आचरण करते हुए जपयज्ञ को निरन्तर अपनाये रखें। इन समस्त यज्ञों के माध्यम से हमारा जीवन दिव्य बनकर भगवान् का हो जाये, संसार की सेवा में लग जाये। भगवान् का निरन्तर चिन्तन चलता रहे। हम भी कृतार्थ हों और अन्यों को भी कृतार्थ होने में हम सहायक हो जायें; इसी में जीवन की सफलता है। उसकी ओर हमारे दो चरण ही सही, भगवान् ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा से आगे बढ़ें, इस प्रकार की प्रार्थना सबके लिये करता हुआ अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

राष्ट्रीय योग संस्कार महोत्सव : कतिपय स्मृतियाँ

गीता परिवार दिल्ली – परम पूज्य श्रद्धेय गुरुदेव के आशीर्वाद से गीता परिवार दिल्ली ने राष्ट्रीय योग संस्कार महोत्सव में भाग लिया।

इस महोत्सव में भाग लेने के लिए पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा से प्रतिदिन दो घंटे नियमित अभ्यास व तैयारी के लिए एक सयम निर्धारित किया जिसमें अधिकतम बालक भाग ले सकें। परीक्षा होने के कारण केवल ८ बालक और ६ कार्यकर्ताही संगमनेर जा पाये। यहाँ पर आयोजित अनुपम एवं अलौकिक कार्यक्रम में उपस्थित होकर सब अत्यंत उत्साहित हुए ।

संजय भैया से मिलकर तो बालक अति आनंदित हुए और हम सबके प्रेरणा स्रोत संजय भैया से बात करके दिल्ली में गीता परिवार के कार्य को विस्तार देने के लिए तीन बालकों ने यहाँ आकर उनके कथनानुसार वर्ग लेने आरम्भ कर दिये।

आज जब भी इस कार्यक्रम की CD / Videos देखते हैं तो इस आयोजन की भव्यता देख मन प्रफ्फुलित हो जाता है।

सरिता रानी, दिल्ली

श्री दधिमथी वैदिक गुरुकुल, गोठमांगलोद का भूमि-पूजन सम्पन्न

❋ भूमि-पूजन पर ही करीब पौने दो करोड़ की घोषणाएं।
❋ करीब ५ करोड़ रूपयों की लागत का २२००० वर्ग फुट का निर्माण कार्य होगा।

राष्ट्रसंत स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज के पावन सान्निध्य में श्री दधिमथी वैदिक गुरुकुल, गोठ मांगलोद के भव्य भवन निर्माणार्थ ''भूमि-पूजन'' का कार्यक्रम देशभर से आये दाधीच बन्धुओं एवं अन्य कई गणमान्य लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजित समारोह में 'महाराजश्री' ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि – वर्तमान में वैदिक ज्ञान का ह्रास जिस तीव्र गति से हो रहा है वह भारतीय संस्कृति एवं अस्मिता की दृष्टि से अत्यन्त चिन्ताजनक है। आपने चेतावनी दी कि वेद बचेगा तभी देश बचेगा। आगे आपने इस बात पर सन्तोष व्यक्त किया कि समय की मांग को पहचान कर २५ वर्ष पूर्व ''महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे'' ने जिस दृढ़ता से वेद-रक्षा हेतु एक वेदविद्यालय की स्थापना की थी उनकी संख्या आज आसेतु हिमालय २८ हो चुकी है एवं इनके द्वारा अभी तक करीब एक हजार वेदज्ञ देश को अर्पित किये जा चुके हैं। इन विद्यालयों का संचालन आवासीय गुरुकुल पद्धति पर किया जाता है जो पूर्णत: नि:शुल्क है। इनके लिये सरकार से किसी प्रकार की कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं होती है। पर साथ ही इस बात पर हर्ष भी प्रगट किया कि उनके एक बार के निवेदन पर सर्वश्री ओमप्रकाश जी निजामाबाद, सोहनलाल जी, हैदराबाद, हरिनारायण जी व्यास, हैदराबाद, आर.के. व्यास, कोलकाता एवं नरेश जी जोशी, जोधपुर के सद् प्रयत्नों से अविलम्ब 'श्री दधिमथी सेवा ट्रस्ट' का गठन किया जाकर तुरन्त तीन बीघा भूमि क्रय की जा सकी और उसी पर आज 'श्री दधिमथी वैदिक गुरुकुल' के भवन निर्माणार्थ यह 'भूमि-पूजन' संभव हो सका है। महाराजश्री ने इस अवसर पर भूमि क्रय करने में भू.पू. कार्यकारी अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद जी व्यास, पुणे के सद्प्रयासों का भी स्मरण किया तथा उनकी भी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इसी अवसर पर महाराजश्री ने नव निर्मित 'श्री दधिमथी सेवा ट्रस्ट' की पारदर्शी एवं साफ सुथरी कार्य प्रणाली की भी प्रशंसा की एवं इसे अन्य सामाजिक संस्थाओं हेतु आदर्श एवं अनुकरणीय बताया।

महाराजश्री के एक आव्हान पर सहयोग की झड़ी लगी

यह अत्यन्त सुखद एवं प्रसन्नता का विषय है कि इस अवसर पर महाराजश्री के एक आव्हान पर गुरुकुल के भवन निर्माणार्थ सहयोग करने वालों की झड़ी लग गई। जिसके अन्तर्गत सिंगापुर से इस आयोजन में भाग लेने हेतु पधारे श्री कमल किशोर जी मालोदिया ने भारी करतलध्वनि के मध्य भवन की सम्पूर्ण पहली मंजिल के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की।

इस पर महाराजश्री ने भी इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं जीवन में सुख-समृद्धि हेतु आशीर्वाद प्रदान किया। श्री मालोदिया जी ने विनम्रता पूर्वक इसे समाज के प्रति अपना पुनीत कर्तव्य एवं महाराजश्री के प्रति अपनी विनीत-सेवा बताया। वहां उपस्थित स्वजनों ने श्री मालोदिया जी की इस उदार-हृदयता की परस्पर भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

श्री मालोदिया जी की घोषणा के तुरन्त बाद करतलध्वनि एवं वहाँ व्याप्त भारी हर्ष के मध्य एक के बाद एक लाखों रुपयों की कई घोषणाएं होती गई।

गुरुकुल भवन का निर्माणकार्य

श्री दधिमथी वैदिक गुरुकुल भवन-निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी दायमा, निजामाबाद ने

कहा कि इसमें करीबन २२००० वर्गफुट का निर्माण कार्य होगा। जिनमें वैदिक गुरुकुल के बटुकों हेतु अध्ययन कक्ष, पुस्तकालय, कम्प्यूटर कक्ष, छात्रावास, भोजनालय के अतिरिक्त गुरुकुल के आचार्यों हेतु चार आचार्य निवास व एक दो मंजिला संत निवास निर्मित किया जायेगा। श्री दायमा ने आगे बताया कि उपरोक्त के अतिरिक्त एक ट्यूबवैल व अन्डरग्राउन्ड पानी के टांकी तथा बटुकों के व्यायाम आदि की भी व्यवस्था होगी। सचिव श्री हरिनारायण व्यास ने अवगत करवाया कि वर्तमानमें गुरुकुल में, अधिकतम पचास बटुकों के अध्ययन एवं निवास की व्यवस्था होगी। गुरुकुल भवन के पूर्ण होते ही अतिशीघ्र बटुकों की भर्ती एवं अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हो जायेगा। श्री व्यास के अनुसार गुरुकुल में वैदिक शिक्षा के साथ आधुनिक कम्प्यूटर आदि की शिक्षा भी दी जायेगी।

पुस्तक विमोचन :-

समारोह में महाराजश्री के कर-कमलों से "**पूर्णयोग बोधिनी गीता**" का विमोचन भी सम्पन्न हुआ। इसमें महाराजश्री के उन प्रवचनों का संग्रह है जिनमें यह बताया गया है कि पूर्णयोग यदि किसी एक पुस्तक में उपलब्ध है तो वह श्रीमद्भगवद्गीता ही है।

योग सम्बन्धी अन्य ग्रन्थ जैसे 'पातंजल योगसूत्र' अथवा 'हठयोप्रदीपिका' आदि में एक साथ पूर्णयोग की व्याख्या नहीं है। इस दृष्टि से 'पूर्णयोग बोधिनी गीता', श्रीमद्भगवद्गीता के व्याख्या क्षेत्र में एक नवीन आयाम स्थापित करती है। अब वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व को "विश्व योग दिवस" को "भगवद्गीता दिवस" स्वीकार करने को बाध्य होना पड़ेगा। महाराजश्री के आदेशानुसार इस पुस्तक की प्रतियाँ प्रसाद स्वरूप वितरित की गई।

- भालचन्द्र व्यास

धर्मश्री अन्नकूट महोत्सव, २०१६

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी धर्मश्री अन्नकूट महोत्सव दि.३१ अक्टूबर २०१६, सायं ४ से ७ के शुभ वेला में पू. गुरुदेव की सन्निधि में बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम श्री सत्यनारायण जी मुंदडा परिवार द्वारा गिरिराज गोवर्धन जी की विधिवत् पूजा की गई तथा पू. गुरुदेव के पावन करकमलों द्वारा गौमाता एवं ब्राह्मण पूजन किया गया। इस महोत्सव में पुणे के सुप्रसिद्ध समूह श्री बजरंग भजनी मंडल के द्वारा सुमधुर भजनों का गायन किया गया। तत्पश्चात् पुणे शहर में विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे गणमान्य डॉ. श्री. कल्याणजी काले, डॉ. श्री. शिरीष जी लिमये, डॉ. सौ. हेमलताजी साने, श्री. राहुलजी मारुलकर एवं श्री. नारायणजी मीणा को पू. गुरुदेव के करकमलों द्वारा सम्मानित किया गया। एवं गीता परिवार, पुणे की ज्येष्ठ कार्यकर्ता सौभाग्यवती वेदिका कुलकर्णी द्वारा गत ६ महीनों भगवद्गीता के ६ अध्याय कंठस्थ करवाये, इसलिये गीता परिवार, पुणे की ओर से उन सभी ८ बालिकाओं एवं वेदिका ताई का पू. गुरुदेव के हस्तकमलों से सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् पूज्यवर के आशीर्वाद हुये तथा पसायदान एवं महाप्रसाद के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

राष्ट्रीय योग संस्कार महोत्सव : कतिपय स्मृतियाँ

त्रिदशक पूर्ति समारोह में सौ. शोभा हरकुट के नेतृत्व में ५५ बालकों ने भाग लिया। इसी प्रकार **अमरावती** से सौ. नैना कडु के साथ आये बालकों ने नृत्य एवं शोभा यात्रा में अपना योगदान दिया। इसी प्रकार **आर्वी** से सौ. उषा वैद्य, **नागपुर** से श्री पुरुषोत्तम सामदासानी तथा **यवतमाल** से सौ. प्रेमा राशतवार के साथ आये बालकों ने शोभा यात्रा, योगमहोत्सव में प्रशंसनीय रूप से भाग लिया।

योगवासिष्ठ (१५)

मानव जन्म ही मोक्षप्राप्ति का साधन है

विगत अंक में हमने देखा था कि आध्यात्मिक साधना हेतु साधक के भीतर हो संन्यासवत् मन और बाहर हो कर्मयोग!

प्रस्तुत अंक में हम देखेंगे कि उपरोक्त संन्यासवत् जीवन जीने के कौन-कौन से स्तर हैं अर्थात् हमारा वैराग्य कैसा हो और उस स्थिति को हम किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं?

परम पूज्य गुरुदेव ने इस संदर्भ में मोक्षमार्ग हेतु सात सीढ़ियाँ बताई हैं।

हमारी संस्कृति के अनुसार चौरासी लक्ष योनियों में चक्कर काटने के बाद मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। यह आँकड़ा महत्त्वपूर्ण नहीं है। इतना मानने में तो कोई आपत्ति नहीं होगी कि मनुष्य-जन्म दुर्लभ है। कीट-पतंगे,पशु-पक्षी आदि के जन्म देखने पर मानव-जन्म की श्रेष्ठता झट से ध्यान में आ ही जाती है। मनुष्येतर योनियों में प्रकृति की बनाई लीक पर ही सारे जीव घूमते रहते हैं। मानव को स्वतंत्र बुद्धि प्राप्त हुई है। वह अपने पुरूषार्थ से अपने जीवन में चाहे जैसा परिवर्तन ला सकता है। आज तक पशु-पक्षियों के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, परन्तु मानव में और सृष्टि में, सैंकड़ों परिवर्तन हुए हैं।

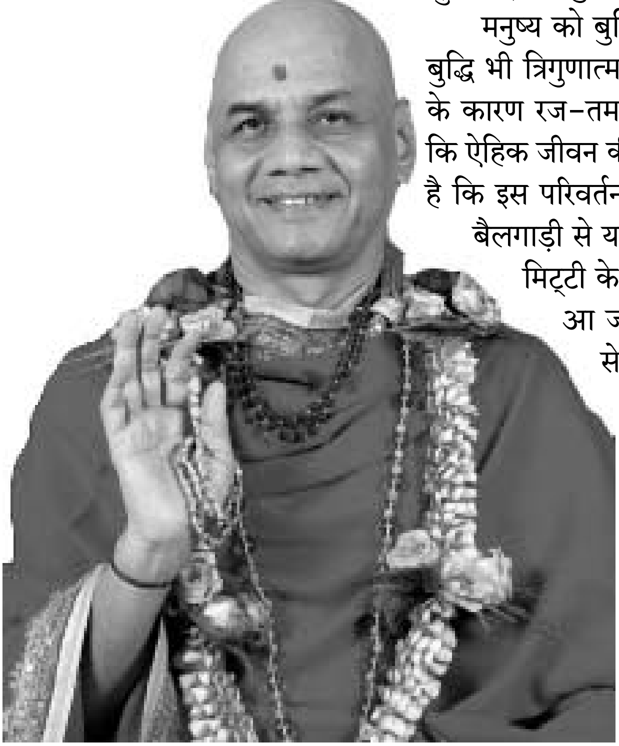

मनुष्य को बुद्धि का वरदान मिला है; यह बात सच है; परन्तु यह बुद्धि भी त्रिगुणात्मक होती है। शरीर एवं इन्द्रियों के सुखों में मग्न होने के कारण रज-तम युक्त बुद्धि ने सैंकड़ों आविष्कार कर डाले हैं; जो कि ऐहिक जीवन की सुख-समृद्धि के लिए है। सात्त्विक बुद्धि का कहना है कि इस परिवर्तन ने शरीर एवं इंद्रियों के परे तो उड़ान भरी ही नहीं। बैलगाड़ी से यात्रा करता था, अब हवाई जहाज से करता है। पहले मिट्टी के दीये थे अब बिजली के बल्ब आ गए। पहले गुस्सा आ जाने पर खोपड़ी पर गदा दे मारता था, अब पिस्तौल से गोली चलाता है। याने बाहर की वस्तुओं में बदलाव लाकर मान लिया कि हम सुधर गए, प्रगति कर गए। वस्तुतः क्रोध जैसा था वैसा ही है, क्रोध प्रकट करने के साधन बदल गए। गदा गई और पिस्तौल आ गई।

आत्मसुधार :-

यह बात ध्यान में लेनी चाहिए कि सभी सुधारों की आत्मा है, 'स्वयं में सुधार लाना'।

दुनियाँ के सभी धर्मों के साधु-संतों ने आत्म-साक्षात्कार को आत्मविकास की

श्रेष्ठतम सीढ़ी माना है। 'मन–बुद्धि–अहंकार' निचली सीढ़ी की प्रकृति के रूप हैं । जिस प्रकार मानव–जन्म दुर्लभ है, उसी प्रकार मोक्ष की इच्छा याने मुमुक्षत्व भी दुर्लभ ही होता है।

एक दृष्टि से देखा जाए तो गौतम बुद्ध ने जीवन का जो सार कहा है; उसे गलत नहीं कहा जा सकता। बुढ़ापा आ ही जाएगा, कोई न कोई रोग घेर ही लेगा, और मृत्यु भी निश्चित रूप से आएगी ही! याने सब कुछ है क्षणभंगुर! क्षणभंगुर वस्तु चाहे जितनी सुंदर एवं आकर्षक क्यों न हो, वह कितना सुख दे सकती है? वह सुखदायक लगी भी, तो उसकी क्षणभंगुरता अधिक दुःखदायक होगी। इस दुनियाँ की समस्त वस्तुएँ, संग्रह, सहवास क्षणभंगुर ही हैं। इस स्थिति में जो हमारे हाथ से छूटने वाला है; उसे हम स्वयं ही छोड़ दें तो कम से कम गँवाने का दुःख तो नहीं होगा। **जीवन के बारे में अत्यधिक आसक्ति को छोड़ देना ही वैराग्य है।** यह वैराग्य भी दुर्लभ ही होता है।

इस दुनियाँ की समस्त वस्तुएँ, संग्रह, सहवास क्षणभंगुर ही हैं। इस स्थिति में जो हमारे हाथ से छूटने वाला है; उसे स्वयं ही छोड़ दें तो कम से कम गँवाने का दुःख तो नहीं होगा। जीवन के बारे में अत्यधिक आसक्ति को छोड़ देना ही वैराग्य है। यह वैराग्य भी दुर्लभ ही होता

वैराग्य इतना आसान नहीं है।

जीवन के हर क्षेत्र में विहार करें। ज्ञानदेव जी कहते हैं, 'अलौकिका नोहावे, लोकांप्रती! (लोगों में **अलौकिक होकर मत रहिए**) परन्तु 'तेथिचा नोहे' (वहाँ का न हो जाए।) वहाँ होकर भी अलिप्त रहिए। 'मैं तुम लोगों में रहता हूँ, खेलता हूँ, रमता हूँ परंतु इससे मैं तुममें ही हूँ, ऐसा मत सोचिए। मैं शरीर से तुम लोगों के साथ ही रहता हूँ परन्तु मेरा मन और बुद्धि एक अलग ही सृष्टि में रमी हुई रहती है।' इस प्रकार बता सकें, ऐसे जीना चाहिए।

जीने की आसक्ति नहीं छूटती। हमारी कल्पना की उड़ान इन्द्रिय–सुखों के परे जाती ही नहीं। हमारे धर्म ने या अन्य धर्मों ने यही कहा है कि पुण्य के परिणाम स्वरूप स्वर्ग मिलता है। वहाँ पीने के लिए अमृत होगा, ऐरावत पर सवारी कर सकेंगे, वहाँ अप्सराएँ नृत्य–गान करेंगी। मतलब वही। जो यहाँ दुर्लभ है, वही वहाँ स्वर्ग में आसानी से मिल जायेगा। परन्तु जो कह सके कि 'मुझे इनमें से कुछ भी नहीं चाहिए' इस प्रकार के वैराग्य भाव का उदय आसान नहीं है। अकाल से आए लोगों को खाने की आत्यंतिक इच्छा होती है। उसी प्रकार आदमी इन्द्रिय–सुखों की आत्यंतिक इच्छा रखता है। उसे इंद्रिय–सुखों की बुभुक्षा होती है। बहुत ही इने–गिने लोगों को मोक्ष की इच्छा होती है। ऐसे लोगों का मार्गदर्शन योगवासिष्ठ किस प्रकार करता है? उसके लिए कुछ सीढ़ियाँ बताई गई हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में जो मार्गक्रमण करना चाहता है, उसके लिए यह विवेचन है।

हमने जो वैराग्य की बातें बताईं वे दरिद्रों के लिए नहीं हैं। जिसे खाने के ही लाले पड़े हों, वह यदि कहे कि 'मैं उपवास करता हूँ' (मैं व्रत रखता हूँ), तो उसके कोई मायने नहीं होते। समर्थ रामदास जी प्रश्न करते हैं, **'जयाचे अरत्र धड़ नाहीं। तयाचें परत्र पुससी कांई?** (जिसका ऐहिक ठीक न हो, उससे परमार्थ के बारे में क्या पूछें?) जीवन के हर क्षेत्र में जो हार चुका है, उसके लिए परमार्थ नहीं है' **''आधी प्रपंच करावा नेटका। मग लागावे परमार्थ विवेका।''** (पहले करो गृहस्थी ठीक से, फिर बाद में सोचो परमार्थ की;) क्योंकि गृहस्थी यदि अच्छी हो तो फिर उससे मन निकाल लेना सच्चा पुरुषार्थ है। संतों का उपदेश है कि **''प्रपंच नेटका करावा''** गृहस्थी अच्छी तरह से करो। परन्तु उसका अर्थ यह नहीं है कि 'गृहस्थी ही अच्छी तरह करते रहो।' **''परमार्थ अवघाचि बुड़वावा, हे बरे नव्हे।''** समर्थ रामदास – (परमार्थ पूरी तरह से डूबो दे। यह भी तो ठीक नहीं।)

(क्रमशः)

श्रीकृष्ण वेदविद्यालय, पानीपत का शिलान्यास संपन्न

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संचालित वेदविद्यालयों कि माला में एक और मणि ओर जोडते हुये दि. १६ नवम्बर से १८ नवम्बर २०१६ के शुभ अवसर पर प.पू. सरसंघचालक डॉ. श्री मोहनजी भागवत, हरियाणा एवं पंजाब के राज्यपाल माननीय श्री कप्तानसिंह जी सोलंकी, परम पूज्य गुरुदेव एवं पानीपत शहर के मुख्य जनों के सान्निध्य में संत ज्ञानेश्वर गीता प्रचार समिति, पानीपत के तत्त्वावधान में गत २ वर्ष से नियमित चल रहे श्रीकृष्ण वेदविद्यालय के नूतन भवन का शिलान्यास अंसल सुशांत सिटी (पानीपत) में विधिवत संपन्न हुआ। इस शिलान्यास समारोह के साथ-साथ पानीपत में परम पूज्य गुरुदेव की अमोघ वाणी में त्रिदिवसीय महाभारत संदेश कथा का भी दिव्य आयोजन किया गया। यहाँ विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि १८ नवम्बर २०१६ के प्रातः १० बजे अंसल सुशांत सिटी के मुख्य चौक का नाम **संत ज्ञानेश्वर चौक** रखा गया। जिसका विधिवत उद्घाटन परम पूज्य गुरुदेव के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

मुख्य कार्यक्रम का आरंभ सायं ५ बजे से आरंभ हुआ। मुख्य अतिथि माननीय सरसंघचालक जी के आगमन पर पूरा पांडाल भारत माता कि जयकार से गूंज उठा, श्रीकृष्ण वेदविद्यालय के वैदिक बटुकों ने वैदिक परंपरा के अनुसार, वेदमंत्रों के उद्घोष से माननीय सरसंघचालक जी, माननीय राज्यपाल महोदय एवं परम पूज्य गुरुदेव का स्वागत किया।

श्रीकृष्ण वेदविद्यालय के नूतन भवन कि शिला का पूजन कर माननीय अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य यजमान श्री वि. आर. गुप्ता एवं श्रीमती सुलोचना गुप्ता द्वारा मुख्य अतिथियों का सम्मान किया गया। पू. गुरुदेव ने गीता परिवार एवं महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के बारे में जानकारी दी एवं वेदों कि महत्ता प्रकट की। पूज्य गुरुदेव के पश्चात् माननीय राज्यपाल श्री कप्तान सिंह जी सोलंकी ने कहा कि पहले पानीपत युद्धों के लिये माना जाता रहा। अब से भविष्य में वेदों की भूमि के रूप में माना जायेगा। आपने आगे कहा कि १००० वर्ष की गुलामी के कारण हम अपने नैतिक मूल्यों को भूल गये हैं यह वेदविद्यालय इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभायेगा यह मुझे विश्वास है। श्रीमान् राज्यपाल महोदय ने वेदों की रक्षा हेतु अपने ऐच्छिक कोष से २५ लाख रु. अनुदान देने की घोषणा की। माननीय राज्यपाल महोदय के पश्चात् परम् पूज्य सरसंघचालक डॉ. श्री मोहनजी भागवत ने कहा कि वेद सभी धर्मों का मूल है, भारतवर्ष जिन बातों से विश्व में विख्यात है, वह सब वेदों से प्राप्त है। आज भी अगर भारत को विश्वगुरु बनाना है तो वह वेदों के ज्ञान से ही संभव है। सारा विश्व इसकी मांग कर रहा है। पूज्य सरसंघचालकजी ने प.पू. गुरुदेव का अभिनन्दन करते हुये कहा की वेदविद्यालयों कि श्रृंखला बनाना सरल कार्य नहीं किन्तु पू. स्वामी गोविन्ददेवगिरिजी महाराज ने भारत के कोने-कोने में वेदविद्यालय की स्थापना कर ३० वेदविद्यालय की श्रृंखला बनाई है, अतः वे बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर हरियाणा के परिवहन मंत्री श्री कृष्णलालजी पंवार, शहरी विधायक श्री रोहित रेवडीजी, उद्योग मंत्री विनोदजी गोयल एवं ग्रामीण विधायक श्री महिपालजी ढांडा भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में संत ज्ञानेश्वर गीता प्रचार समिति, पानीपत के समस्त कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भूमिका निभाई। सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. आशुजी गोयल, लखनऊ ने किया।

मीनाक्षी सुशील गुप्ता (पानीपत)

(त्रिदशकपूर्ति) पृष्ठ १७ का शेष ....

आप में एक आशीर्वाद था। जिस ईश्वरीय शक्ति और तेज से मैं स्वयं को आच्छादित अनुभव कर रहा था, शब्दों में उसका वर्णन असम्भव है। इतने में एक अद्भुत दृश्य के हम सभी साक्षी बन गये। पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज को अपने सहयात्री, अपने बड़े भाई और अपने अभिभावक बताते हुये बाबा रामदेव उनके चरणों में झुक गये और स्वामीजी महाराज ने उनको हृदय से लगा लिया। यह एक अद्भुत दृश्य था !! तेज ही तेज का वंदन कर रहा था, एक सूर्य दूसरे सूर्य का आलिंगन कर रहा था, उनके हृदय से जो प्रेम की धारा बह रही थी, वो देखने वालों की आँखों से प्रेमाश्रु के रूप में प्रवाहित होने लगीं।

जाते-जाते पूज्य बाबा रामदेव और पूज्य स्वामीजी ने संध्याकाल में होने वाले ''योगेश्वर'' महानाट्य के लिये आशीर्वाद दिया। विनीत भाव से; किन्तु संकोच के साथ इस 'सत्कार' को हमने ध्रुव अकादमी की पूरी टीम की ओर से स्वीकार किया; क्योंकि उनके इस आशीर्वाद और अभिनन्दन के अधिकारी केवल मैं और क्षितीश ही नहीं थे; बल्कि ध्रुव अकादमी की प्राचार्या श्रीमती अर्चना घोरपड़े, सौ. अनुराधा भाभी मालपाणी, श्री सचिन जोशी, सौ. सोनाली मोहापात्रा और ध्रुव की पूरी टीम इस सत्कार की अधिकारी थी ..!

श्री महेन्द्रजी काबरा द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन के साथ इस महोत्सव का समापन हुआ। दो महान संतों के आशीर्वाद के साथ हम ''योगेश्वर'' के प्रस्तुति की तैयारियों में लग गये।

– श्री गिरीश डागा, संगमनेर

वेदविद्यालयों में छात्र प्रवेश सूचना

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा सपूर्ण भारत में संचालित 28 वेदविद्यालयों में गुरुकुल एवम् पाठशाला पद्धती से नि:शुल्क वेदों का अध्ययन किया जाता है। साथ में ही अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान, गणित, संगणक (कम्प्युटर) आदी विषय भी सिखाये जाते हैं। अध्ययन का कालावधि सात वर्षोंका है।

प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र एवं अन्य जानकारी हेतु संपर्क –

✲ महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान कार्यालय ✲

धर्मश्री मानसर अपार्टमेंट, सूर्यमुखी दत्त मंदिर मार्ग, पुणे विद्यापीठ रोड, पुणे – 411016 **महाराष्ट्र**

दूरभाष – 020 - 25652589 **Email Id : dharmashree123@gmail.com**

मोबाईल नं. : 1) श्री. अनिल दातार – 8275066572 2) वे.मू. श्री. महेशजी नंदे –9890837979 तथा 3) श्री. अविनाश मोरे – 9420900425

www.dharmashree.org पर प्रवेश संबंधी जानकारी मिल सकती हैं।

क्र.	प्रदेश	संपर्क	मोबाईल नं.
1)	महाराष्ट्र	वे. मू. श्री. शशांक कुलकर्णी वे. मू. श्री. भगवान जोशी	9145382563 9860596163
2)	उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू, हरियाणा, पंजाब	वे. मू. श्री. प्रदीपजी पांडे वे. मू. श्री. टीकारामजी रिजाल	9675721377 9453788502
3)	प. बंगाल, उडीसा, मणिपुर तथा अन्य प्रदेश	वे. मू. श्री. रामरूपजी मिश्र वे. मू. श्री. हेम अधिकारी	09433495495 08131851842
4)	राजस्थान, गुजरात, कच्छ, मध्यप्रदेश	वे. मू. श्री. ब्रिजेशजी तिवारी वे. मू. श्री. रामकरण शर्मा	9950869996 09724196172

भक्ति नापने का मीटर विश्वास है। – पूज्यपाद

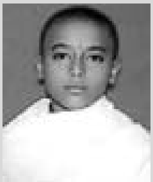

चि. केदार गणेश कुलकर्णी
(औरंगाबाद, महा.)

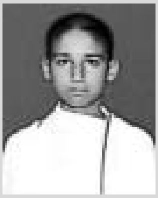

चि. ऋषिकेश रामेश्वर व्यास
(बीड, महा.)

|| वेदाः सर्वहिताथार्य ||

छात्राभिनंदन!

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान संचालित श्री समर्थ वेदविद्यालय, ढालेगांव के चि. केदार गणेश कुलकर्णी (औरंगाबाद, महा.) एवं चि. ऋषिकेश रामेश्वर व्यास (बीड, महा.) छात्रों ने कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर की परीक्षाओं में क्रमशः वेदविद्या, कनिष्ठ पदविका एवं वेदविद्या ज्येष्ठ पदविका प्राप्त करके इन छात्रों ने यह यश प्राप्त करके महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान एवं श्री समर्थ वेदविद्यालय, ढालेगांव का सम्मान बढाया हैं। अतः इन दोनों का हार्दिक अभिनंदन!

वेदाध्यापक डॉ. श्री. विजयकुमारजी पट्टजोशी एवं वेदमूर्ति लक्ष्मीकांतजी उन्हाळे इनका भी अभिनंदन!

|| श्रीहरिः ||

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम ई. स. २०१७ *

दिनांक	स्थान	कथा	दिनांक	स्थान	कथा
१६–०२ से १९–०२	ढालेगांव (महा.)	हनुमान कथा	०६–०४ से १६–०४	न्यूयॉर्क (U.S.)	श्रीरामकथा
२० फरवरी	आलंदी (महा.)	वार्षिकोत्सव	१७–०४ से २६–०४	टोरांटो (Canada)	श्री ज्ञानेश्वर मूर्ति प्रतिष्ठा
२२–०२ से २४–०२	पुष्करराज (राज.)	प्रवचन	०६–०५ से १३–०५	सिक्किम/भूतान	बुद्धकथा
२७–०२ से २८–०२	रमणरेती (गोकुल)	प्रवचन	३०–०५ से ०७–०६	स्वर्गाश्रम	भागवत कथा
०१–०३ से ०२–०३	हरिद्वार (उत्तराखंड)	गंगामाता यज्ञ	०१–०७ से ०८–०७	स्वर्गाश्रम	गीता साधना शिबिर
०४–०३ से १२–०३	वृंदावन	महाभारत कथा	९ जुलाई	स्वर्गाश्रम	गुरुपौर्णिमा व्यासपूजा
१९–०३ से २६–०३	दिल्ली (आदर्शनगर)	गीता–महाभारत कथा	१०–०७ से २४–०७	स्वर्गाश्रम	श्री हरिहर भक्ति महोत्सव
२८–०३ से ०३–०४	जालना (महा.)	दत्तपुराण कथा			

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क :- धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे-विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११०१६

कार्यालय दूरभाष :- (020) 25652589 / 25672069

Website : www.dharmashree.org **Email : dharmashree123@gmail.com**

गीता साधना शिविर (स्वर्गाश्रम)

शनिवार, दिनांक ०१ जुलाई से शनिवार, ०८ जुलाई २०१७ तक

अधिसूचना

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित 'गीता-साधना-शिविर' अब साधकों का प्रधान आकर्षण बन गया है। भगवद्‌गीता भारतीय संस्कृति, धर्म तथा अध्यात्म साधना की मुख्य आधारशिला है। वेद-वेदांत की संपूर्ण शिक्षा का सार गीता है। **गीता का अध्ययन करना, इसे ठीक से समझने का प्रयास करना और इसकी साधना प्रणाली को दैनिक जीवन में उतारने की प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करना साधकों के लिये आसान हो जाए, इस हेतु गीता साधना शिविर का आयोजन किया जाता है।**

प्रातःस्मरण, योगासन, प्राणायाम, ध्यान, गीता-अध्ययन, प्रवचन, प्रश्नोत्तरी, चिंतनिका, संकीर्तन आदि के साथ-साथ नित्यकर्म शिक्षा (देवपूजा, संध्योपासना इत्यादि) के कारण आधुनिक एवं पारंपरिक सभी प्रक्रियाओं का सुंदर समन्वय होने से यह अपने ढंग का अनूठा शिविर होता है। ऐसे शिविर मुख्यतः पू. गुरुदेव के अनुगृहीत दीक्षा प्राप्त साधकों के लिये आयोजित किए जाने पर भी; स्थान की उपलब्धता के आधार पर कुछ अन्य जिज्ञासुओं को भी प्रवेश मिल जाता है। साधकों की संख्या सीमित रखी जाती है।

आगामी **१ जुलाई से ८ जुलाई, २०१७ तक** की अवधि में शिविर का आयोजन वानप्रस्थ आश्रम (स्वर्गाश्रम), ऋषिकेश में किया जाना निश्चित हुआ है। **इच्छुक साधक अन्तिम पृष्ठों पर प्रकाशित फार्म पत्रिका से निकाल कर तथा उसे भर कर २० जून, २०१७ से पूर्व पुणे कार्यालय को भिजवा देवें।** विलम्ब से प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जावेगा। नियमानुसार अग्रक्रम से प्रवेशिका भेजी जायेगी-तभी अपना स्थान आरक्षित समझना चाहिये।

कार्यालय पत्राचार
गीता साधना शिविर, संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल,
धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंटस्,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९
-: संपर्क :-
श्री दत्ताजी खामकर, (मो. ७७०९१०३२९३)

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

महर्षि वेदव्यास पूजन एवं साधक सम्मेलन

दि. ०८ जुलाई एवं ०९ जुलाई, २०१७

।। स्नेह – निमंत्रण ।।

कार्यक्रम स्थान : वानप्रस्थ आश्रम (स्वर्गाश्रम), ऋषिकेश

बन्धुवर,

सप्रेम जय श्रीकृष्ण !

आपको यह सूचित करते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का गुरुपूर्णिमा महोत्सव एवं संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल का साधक सम्मेलन वानप्रस्थाश्रम, स्वर्गाश्रम में आयोजित किया जा रहा है। परम श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी (आचार्य श्री किशोरजी व्यास) महाराज गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर हमारे बीच होंगे। इस उत्सव में आप साग्रह आमंत्रित हैं।

भवदीय

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ***संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल***

★ साधक सम्मेलन ★

(शनिवार, दिनांक ०८ जुलाई, २०१७)

दोपहर : ४.०० से ४.३० सामूहिक जपानुष्ठान
४.३० से ५.३० पू. महाराजश्री के प्रवचन/ ५.३० से ६.०० संवाद,
६.३० से ७.३० गंगा दर्शन–स्नान

रात्रि : ७.३० से ९.०० भोजन /९.०० से १०.०० स्नेह मिलन, गुणदर्शन/संवाद

विशेष : सभी साधक कृपया ०८ जुलाई, २०१७ दोपहर ३ बजे तक आयोजन स्थल पर पहुँच जाएँ।

★ महर्षि वेदव्यास पूजन ★

(रविवार, दि. ०९ जुलाई २०१७)

महर्षि वेदव्यास जी भगवान् नारायण की ज्ञानकला के अवतार हैं, समस्त प्राचीन ऋषिमुनियों के प्रतिनिधि हैं, सनातन धर्म के समस्त संप्रदायों के परमाचार्य हैं, भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च उद्‌गाता हैं। वे गुरु–तत्त्व का साकार विग्रह हैं। संपूर्ण भारतीय संस्कृति ने उन्हें अपने गुरु रूप में स्वीकार किया है। कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण–पूजन हमारा सांस्कृतिक उत्सव है। 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के वार्षिकोत्सव के रूप में यह मंगल–समारोह **इस वर्ष गंगामैया के तट पर स्वर्गाश्रम में स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज की प्रेरक उपस्थिति में मनाया जाएगा।**

सभी भाविक-भक्तों से अनुरोध है कि इस उत्सव में सहभागी होकर पुण्यलाभ अर्जित करें।

कार्यक्रम

प्रातः : ५.०० प्रातःस्मरण/७.०० से ७.३० : उपासना, प्रार्थना/७.३० से ८.३० : अल्पाहार/ ८.३० से १० : अभिषेक, महापूजा/१०.३० से ११.३० : हवन-संकीर्तन/ ११.३० से १२ : कार्यनिवेदन, आशीर्वचन तथा आरती, दर्शन एवं समर्पण/

दोपहर : १२.०० से १.०० तक गुरुदर्शन, समर्पण/१.०० से २.३० महाप्रसाद/३.०० साधक प्रस्थान

इस संपूर्ण कार्यक्रम के आयोजक यजमान हैं :

१) श्री. मांगेरामजी गर्ग (दिल्ली) - 09350907700
२) श्री. बृजमोहनजी अग्रवाल (दिल्ली)-09810018909
३) श्री. सुनीलजी अग्रवाल (दिल्ली)- 09810050595
४) श्री. राकेशजी गुप्ता (दिल्ली)- 09810137793
५) श्री. दिनेशजी गर्ग (दिल्ली) - 09810010251
६) श्रीमती विनीताजी सराफ (दिल्ली)- 9810057936
७) श्री. सुरज प्रकाशजी गोयल (दिल्ली)- 09811612279
८) श्री. सतीशचंद्रजी मलिक (दिल्ली)- 09910384365
९) श्री. नीरजजी रायजादा (दिल्ली)- 9999991098

नोट :- गुरुपूर्णिमा संबंधी जानकारी, हरिहर भक्ति महोत्सव के सम्पर्क सूत्रों से भी प्राप्त की जा सकती है।

।। श्री हरिः ।।

श्री हरि-हर भक्ति महोत्सव

सोमवार दि. १० जुलाई, २०१७ से सोमवार दि. २४ जुलाई २०१७ तक के अतिरिक्त महोत्सव के अंतर्गत होने वाले विभिन्न उपासना कार्यक्रम

प्रातः ६ से ९ श्री गंगा लक्ष्मीनारायण यज्ञ

प्रातः ७ से ९ चतुःसहस्र पार्थिव शिवलिंगार्चन/ ७ से ९ चतुःसहस्र श्रीयंत्र कुंकुमार्चना एवं शिवपूजा (सहस्र बिल्वार्चन), श्रीकृष्णपूजा (सहस्र तुलसीअर्चन)आदि

प्रातः ९.३० से १२ **भक्तियोग : संपूर्ण दर्शन**

अपराह्न ३.०० से ३.३० श्री शिवमहिम्न एवं विष्णुसहस्रनाम पाठ

३.३० से ६ **भक्तियोग : संपूर्ण दर्शन**

सायं ५.३० से ७.३० बजे तक लघुरुद्र अभिषेक

रात्रि ८.१५ से ९.०० श्रीराधा-कृष्ण दोलोत्सव (झूला) दर्शन, पदगान एवं आरती, श्री रामचरित मानस पारायण

रात्रि ९.०० से ९.३० बजे तक प.पू. गुरुदेव से शंका समाधान

परम पावनी गंगामैया का पावन तट, पवित्रतम श्रावणमास, शुकस्वरूप स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी (आचार्य किशोर जी व्यास) के श्रीमुख से पूर्ण विस्तार सहित हिन्दी में **त्रिसाप्ताहिक श्री भक्त चरित्र कथा** तथा सवालक्ष पार्थिव **शिवलिंगार्चन, श्रीयंत्र कुंकुमार्चन, बिल्वार्चन, तुलसी अर्चना आदि, नित्य प्रदोष वेला में लघुरुद्राभिषेक, सामूहिक स्तोत्र पाठ, पदगान एवं ठाकुर श्रीश्यामा-श्याम का झूलादर्शन** तथा वानप्रस्थ आश्रम का सुखद निवास, इन सबके कारण यह भक्ति महोत्सव वैकुंठधामतुल्य भावमय वातावरण में संपन्न होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

इस सरस भक्ति महोत्सव में सम्मिलित होकर **श्री भक्त चरित्र कथा** का श्रवण करना एवं विविध पूजा-अर्चनाओं में सहभागी होना परम पुण्यवान के लिये ही संभव है। आपसे हार्दिक अनुरोध है कि आप सपरिवार इसमें सहभागी हों एवं अपने परिचितों को भी यह जानकारी देकर इस पुण्यार्जन के लिये प्रेरित करें।

★ सूचना संकेत ★

१) पार्थिव सहस्र शिवलिंगार्चन, लघुरुद्रअभिषेक, श्रीयंत्र-कुंकुमार्चन, बिल्वार्चन, तुलसी अर्चन तथा झूला आरती के दैनिक यजमान आप बन सकते हैं। हर आराधना की अलग-अलग सेवा (भेंट) निर्धारित रहेगी; जिसकी जानकारी श्री. विश्वनाथजी राठी, कोलकाता से (मो.न. नीचे देखें) प्राप्त की जा सकती है।

२) कथा अथवा आराधना, अभिषेक, अर्चना के यजमानों को अपने साथ कुछ भी सामग्री लाने की आवश्यकता नहीं है, पर पूजा के उपयुक्त भारतीय परिधान की अनिवार्यता के कारण अपने परिधान अवश्य लायें।

भोजन व्यवस्था :-

३) सशुल्क भोजन व्यवस्था सभी की वहीं की जा रही है। संयोजक - श्री चन्द्रकान्त केले, धुलिया एवं श्रीमती ललितादेवी मालपाणी जी परिवार, संगमनेर

४) भोजन व्यवस्था सभी अपनी-अपनी भी कर सकते हैं। सभी के निवासस्थान पर रसोई के बर्तन उपलब्ध हैं, गैस की व्यवस्था हो सकती है।

५) **वानप्रस्थ आश्रम के भोजनालय में भी कूपन पद्धति से** सात्त्विक भोजन, चाय तथा अल्पाहार उपलब्ध रहेगा।

६) निवास एवं भोजनविषयक उपरोक्त नियम सभी कथा यजमान, श्रोता एवं सत्संगी भाई-बहनों के लिये एक समान ही रहेंगे।

७) श्रावण मासिक कथा में तपस्या के लिये पधारना है - यह भान रहें। नित्योपयोगी चीजें तथा आवश्यक दवा-औषधि साथ रखें, पर मूल्यवान वस्तुएँ तथा आभूषण आदि चीजें बिल्कुल न लावें।

८) किसी भी प्रकार के यजमान न बनने पर भी सभी भाविक कथा श्रवण, पूजा दर्शन, स्तोत्र पाठ, पारायण-कीर्तनादि सभी कार्यक्रमों में श्रद्धापूर्वक निःसंकोच सहभागी हो सकते हैं।

९) अपनी भेंट, दान-दक्षिणा आदि आर्थिक सेवा कृपया '**श्रीकृष्ण सेवा निधि**' ट्रस्ट के नाम से प्रदान कर रसीद प्राप्त करें। श्रीकृष्ण सेवा निधि, धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११०१६, दूरभाष ०२०-२५६५२५८९

१०) इस संपूर्ण आयोजन का दायित्व एवं निर्णय के सभी अधिकार संयोजन समिति के अधीन रहेंगे। किसी भी विषय में अधिक जानकारी के लिये संयोजन समिति अथवा व्यवस्थापक मंडल से संपर्क करें।

संपर्क :

● श्री चंद्रकांत जी केले काका (धुलिया), ०९४२२२८५४६८ ● श्री. विश्वनाथजी राठी (कोलकाता) ९३३१०४००५५ ● श्री नारायणदास जी मारू (सूरत), ०९४२७८३५५०९, ● श्री बृज मोहनजी अग्रवाल (दिल्ली) ०९३५००४८३०

।। श्रीहरिः ।।

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल एवं समन्वय परिवार प्रणीत

गीता साधना शिविर

(वानप्रस्थ आश्रम)

स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश (उत्तराखंड)

शनिवार, दि. १ जुलाई से शनिवार, दि. ८ जुलाई २०१७ तक

आवेदन-पत्र

प्रति, दि. / / २०१७

श्री संयोजक महोदय,

जय श्रीकृष्ण!

मैं आपके द्वारा आयोजित 'गीता साधना शिविर' में सम्मिलित होना चाहता/चाहती हूँ। मेरे विषय में आवश्यक जानकारी निम्नानुसार है। कृपया मुझे शिविर में प्रवेश दें।

भवदीय,

हस्ताक्षर-----------------

व्यक्ति-परिचय

नामः श्री/श्रीमती --

पिता / पति का नाम --

पत्राचार का संपूर्ण पता --

– ---------------------------- पिनकोड ----------------------

दूरभाष : निवास -------------------------- कार्यालय ----------------------

(एस.टी.डी. कोड) -------------------- मोबाईल नं. ----------------------

व्यवसाय -------------------------- शिक्षा ----------------------

आयु. -------------------------- दीक्षा वर्ष ----------------------

मातृभाषा -------------------------- अन्य ज्ञात भाषाएँ ----------------------

प्रवृत्ति परिचय

- क्या आप सत्संग, नित्य साधना, जप, पूजापाठ, योगाभ्यास आदि में से कुछ करते हैं? ....हाँ/नहीं
- यदि हाँ, तो कृपया संक्षेप में जानकारी दें। ------------------------------
- सद्गुरु के रूप में आपकी श्रद्धा किसमें है? ----------------------------
- गुरुमंत्र का जप प्रतिदिन कितनी माला करते हैं? --------------------------
- इस शिविर में सहभागी होकर आप क्या चाहेंगे? ------------------------
- कृपया एक नाम लिखें। आपके इष्ट देवता ------------------------------
- आदर्श व्यक्तित्व --
- आपके प्रिय संत -------------------- प्रिय ग्रंथ -----------------
- आपका प्रिय तीर्थ ------------------- प्रिय लेखक ----------------

  आदर्श महापुरुष -------------------- प्रिय कवि -----------------
- क्या आपकी कोई स्वास्थ्यविषयक समस्या है? (जैसे मधुमेह, रक्तचाप, हृदयविकार, आम्लपित्त)

- क्या आप किसी मानसिक समस्या से ग्रस्त हैं? (जैसे निद्रानाश, तनाव, नैराश्य, चिंता)

- क्या आप संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के 'गीता साधना शिविर' में इससे पहले उपस्थित रहे हैं? हाँ/नहीं।
- यदि हाँ, तो कितने एवम् कौनसे शिविरों में ----------------------------

  ----
- पूर्व शिविर के अनुभवानुसार इस शिविर की व्यवस्था में सुधार हेतु कुछ सुझाव/अपेक्षा हो तो लिखें।

- क्या आप इस प्रकार के अन्य किसी साधना शिविर में उपस्थित थे? -----------हाँ/नहीं।
- यदि हाँ, तो कितने एवम् कौनसे शिविरों में ----------------------------
- साथ में रु. ३५००/- का पुणे में देय **'संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल'** के नाम का बैंक का अकाऊंट पेयी डिमांड ड्राफ्ट क्र. _______________ दि. _______________ का संलग्न है।

हस्ताक्षर________________

<u>आवेदन पत्र कृपया निम्नलिखित पते पर भेजें:</u>

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल : धर्मश्री कार्यालय, मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९/२५६७२०६९

नोट :- अधिक आवेदन पत्रों की आवश्यकता होने पर इसकी फोटो स्टेट प्रति भी भेजी जा सकती है।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०७/२०१६ से दिनांक ३१/१२/२०१६ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

पुणे: श्री. प्रमोदजी कर्वा, श्री. विनीतजी मेहरा, श्री. सचिनजी सोमानी, श्री. मनीषजी मिणियार, श्री. राजकुमारजी मुरडिया, श्री. आनंदजी मंगरुळकर, श्री. देवेंद्रजी श्रीवास्तव, श्री. अंबिकाप्रसादजी कौशिक, श्री. रविजी कुलकर्णी, श्री. प्रकाशजी रेघाटे, श्री. प्रवीणजी अग्रवाल, सौ. वेदिका कुलकर्णी, **सातारा:** श्री. बालकृष्णजी अनगल, **जबलपुर:** श्री. भगतसिंहजी बनाफर, **मुंबई:** मे. आदित्य विक्रम बिर्ला मेमो. ट्रस्ट, **दिल्ली:** श्री. विवेकजी गुप्ता, **बेंगलुरु:** मे. माहेश्वरी महिला मंडल, **अंमळनेर:** श्रीमती रजनी केले, **कोलकाता:** श्री. चितलांगिया चॅरि. ट्रस्ट

रु. ५० हजार से १ लाख

लखनऊ: श्री. श्रीकांतजी शर्मा, **पुणे:** श्री. महावीरजी सुराणा, मे. एस. जी. मुंदडा अँड कंपनी, **नांदेड:** श्री. चतुर्भुजजी दरक, **मुंबई:** मे. बंग डाटा फॉर्मस प्रा. लि., श्री. मधुसुदनजी झुनझुनवाला, **कुरुक्षेत्र:** श्री. भूषणजी गुप्ता, श्रीमती कमलेश गुप्ता, **हाथरस:** श्री. गिरिधारीलालजी लोहिया, **चंद्रपुर:** श्री. लीलारामजी उपाध्याय एवं परिवार, **मानवत:** डॉ. श्री. द्वारकादासजी लड्डा एवं परिवार, **वालुर:** श्री. वसंतराव चौधरी, **कोलकाता:** श्री. के. पी. बिहाणी चॅरि. ट्रस्ट, श्री. तिरुपती बालाजी फाउंडेशन, **नागपुर:** श्री. पुरुषोत्तमजी रामदासानी, श्री. अविनाशजी संगमनेरकर, सौ. वंदना वर्णेकर,

रु. २५ हजार से ५० हजार

कोलकाता: श्री. शौर्यवीरजी साबू, श्री. नागरमल पेरिवाल फाउंडेशन, **मुंबई:** श्रीमती पूजा कर्वा, मे. तुलसी पब्लिक चॅरि. ट्रस्ट, **नॉयडा:** श्रीमती शिल्पी मुदगल, **बेंगलुरु:** श्री. श्यामसुंदरजी रांदड, मे. श्रीजी फुड्स, **सोलापुर:** श्रीमती राजलक्ष्मी भुतडा, **चांदुरबाजार:** डॉ. श्री. विजयकुमारजी हरकूट, **नागपुर:** कु. देवश्री वर्णेकर,

रु. १० हजार से २५ हजार

हैदराबाद: श्री. बद्रीविशालजी अग्रवाल, श्रीमती गंगा सोमाणी, श्री. अरुणकुमारजी अग्रवाल, श्री. राजगोपाल शारदादेवी परतानी चॅरि. ट्रस्ट, श्रीमती अन्नपूर्णा भक्कड, **पुणे:** श्री. सत्यनारायणजी मुंदडा, श्री. कमलेशजी शर्मा, श्री. विवेकजी कुलकर्णी, **दिल्ली:** श्री. आर. एन. भार्गव, श्री. श्यामलालजी कौशिक, श्री. हरिओमजी कौशिक, श्री. रमाशंकरजी वाजपेयी, श्री. शिवकुमारजी गोयल, **मुंबई:** मे. तुलसी पब्लिक चॅरि. ट्रस्ट, मे. व्ही.पी. बेडेकर अँड सन्स प्रा. लि., श्री. निखिलजी दाते, श्रीमती सुधा वसईकर, सौ. सुहासिनी धुरंधर, श्रीमती दिशा ठाकुर लखोटिया, **सोलापुर:** श्री. गिरीशजी तळपल्लीकर, डॉ. श्री. एस. प्रभाकर, मे. निवास धर्मादाय निधि, मे. चौधरी फ्रेट कॉर्पोरेशन, श्री. मधुकरराव फडणवीस, श्री. नवनीतजी तोष्णीवाल, श्रीमती कस्तुरी शास्त्री, श्री. बलवंतराव माढेकर, श्री. सत्यशामजी तोष्णीवाल, श्री. पांडुरंगजी मंत्री, श्री. राजगोपालजी मिणियार, मे. पी. पी. पटेल अँड कं., मे. तिरुपती फॅब्रिक्स, मे. नटराज प्रीस्ट्रेस, श्री. छज्जूरामजी पटवारी, श्री. किशोरजी चांडक, मे. धूत इन्फोटेक, श्री. नंदकिशोरजी मुंदडा, श्री. शंकरलालजी तिवाडी, श्री. ओमप्रकाशजी लड्डा, श्री. राजेंद्रजी घुली, श्री. बालाप्रसादजी मुंदडा, मे. एस. जी. भुतडा अँड असो., श्री. श्रीकिशनजी लाहोटी, श्री. विट्ठलजी लाहोटी, **औरंगाबाद:** श्रीमती जान्हवी

केळकर, **नाशिक:** सौ. वंदना बारटक्के, **मालेगाव:** श्री. गंगाबिशनजी कलंत्री, **देहरादुन:** सौ. विजया गोडबोले, **नांदेड:** डॉ. श्री. बद्रीनारायणजी मुंदडा, **आलंदी:** श्री. गोविंदजी नवले, **पंढरपुर:** श्री. कृष्णाजी लोहार, **कोटा:** श्री. उपेंद्रनाथजी माहेश्वरी, **मउनाथ भंजन:** श्री. दामोदरलालजी ठरड, **अंबड:** श्री. जयनारायणजी गिल्डा, **फैजाबाद:** श्रीमती उमा बंसल, **बेंगलुरु:** श्री. कमलजी लड्डा, श्री. विवेकजी बागडी, श्री. श्यामजी मंडल, श्री. कमलकिशोरजी राठी, श्रीमती प्रेमलताजी, कर्नाटका महर्षि दधीचि परिषद, मे. सीमेंट डिस्ट्रिब्युटर्स, श्री. सुनीलकुमारजी बजाज, **जहिराबाद:** श्रीमती मीना झावर, **मोदीनगर:** श्री. अंबरीशकुमारजी गुप्ता, **परभणी:** श्री. बंकटलालजी मुंदडा, श्री. हरिरामजी दरगड, **गंगाखेड:** श्री. गोपालदासजी तापडिया, **लातुर:** श्री. लक्ष्मीकांतजी कर्वा, **गुलबर्गा:** श्रीमती रेखा तापडिया, **गाझियाबाद:** श्री. पुरुषोत्तमस्वरूप भटनागर, श्रीमती कृष्णा भटनागर, **दुर्ग:** श्रीमती उमा तिवारी, **संगमनेर:** श्रीमती विमला अग्रवाल, **साहिबाबाद:** श्री. राजेश्वरप्रसादजी तिवारी, **कोलकाता:** श्रीमती माधुरी राठी, **शिंदोळा:** श्री. प्रकाशजी विंचुरकर, **नागपुर:** सौ. ममता अरुण गद्रे, श्री. प्रकाशजी शुक्ल, श्री. श्रीनिवासजी वर्णेकर, **बिलासपुर:** डॉ. श्री. पंकजजी चांदे,

रु. ५ हजार से १० हजार

पुणे: श्री. संजीवजी कुलकर्णी, सौ. मृणाल विप्रदास, श्रीमती शांताबाई झंवर, श्री. गणेशलालजी तापडिया, श्री. कमलेशजी शर्मा, श्री. कुणालजी देशमुख, श्री. श्रीपादजी देशमुख, सौ. वंदना मुंडे, **पठानकोट:** श्रीमती स्नेहलता महाजन, **सोलापुर:** श्रीमती साधना डागा, श्री. डब्लु सूर्यप्रकाश, श्री. फूलचंदजी डागा, डॉ. सौ. जयश्री कुलकर्णी, श्री. अरविंदजी कुलकर्णी, श्रीमती जानाबाई बिटला, श्री. ज्ञानेश्वरजी कल्याणशेट्टी, **आलमट्टी:** श्री. गोविंदजी राठी, **समालखा:** श्री. विष्णुदत्तजी शर्मा, **कुरुक्षेत्र:** श्री. ब्रह्मप्रकाशजी शर्मा, **पानीपत:** श्रीमती वसुधा गुप्ता, श्री. अंबरीशजी मित्तल, **औरंगाबाद:** डॉ. श्री. रमेशजी मालानी, श्रीमती कौशल्याबाई चांडक, सौ. ज्योती काळे, **नागपुर:** श्रीमती क्षमा खांडवेकर, श्रीमती मीना कुलकर्णी, सौ. विजया संगावार, श्री. व्ही. एन. पुसदकर, डॉ. ज्योती मंडलेकर, सौ. जयश्री मुंडे, श्री. गणेशजी कामथ, सौ. शीला बंगाले, **देवघर:** श्री. विनयकुमारजी मुंदडा, **उदयपुर:** मे. सर्वा फॅशन, **चंडीगढ:** श्री. सत्यदेवजी कोहली, **बेंगलुरु:** श्री. दाऊलालजी बागडी, श्री. वसंतकुमारजी झा, श्री. राजेशजी अट्टल, डॉ. श्री. एस. पी. देशमुख, **गुलबर्गा:** श्री. राधाकिशनजी भगवानदासजी तापडिया चॅरि. ट्रस्ट, **दिल्ली:** श्रीमती श्रुती अवस्थी, श्रीमती रिचिशा गुलाटी सिक्का, श्री. विजयकुमारजी गुप्ता, श्रीमती नीता टंडन, **हिंगोली:** श्रीमती गंगाबाई बजाज, **वरुड:** सौ. तेजस्विनी पाटील, **बीड:** श्री. त्रिंबकदासजी झंवर, श्री. रमेशजी तापडिया, **वरणगांव:** सौ. शारदा चौधरी, **मुगलसराय:** श्रीमती शारदा कंदोई, **कोलकाता:** श्री. राजेशकुमारजी पोरवाल, श्रीमती शोभा मोहता, श्री. विश्वनाथजी राठी, श्री. चंदनकुमारजी काकडा, **जोधपुर:** श्री. मदनगोपालजी व्यास, श्री. जगदीशजी व्यास, **सेलू:** श्रीमती किरण बिहाणी, **लखनऊ:** श्रीमती कुमकुम भटनागर, श्री. सत्यदेवजी कोहली, **हैदराबाद:** श्री. हरिनारायणजी व्यास, श्री. पृथ्वीराजजी दरक, **जगन्नाथपुरी:** श्री. दिवाकरजी महापात्र, **आंबेगाव:** श्री. ज्ञानोबाजी रोजुळ, **लातुर:** श्रीमती रामकुंवरबाई पारीक, **उस्मानाबाद:** श्रीमती चंद्रकला मुंदडा, **नांदेड:** श्री. रमेशचंद्रजी सारडा, **मुंबई:** श्री. महेंद्रजी काबरा, श्री. भागीरथजी लड्डा, **ठाणे:** श्री. अभयकुमार पुरोहित. **वाराणसी:** श्री. महेंद्रनाथजी व्यास, **सिकंदराबाद:** गीता परिवार, **संगमनेर:** श्री. सुमंतजी कोकीळ, सौ. पुष्पा खत्री, **अमरावती:** श्री. श्रीचंदजी सोडानी, **चंद्रपुर:** श्री. अशोकजी कुलकर्णी, **मडेली:** श्री. मोहनलालजी गांधी